अगहन मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 312 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज शनिवार 27 नवम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

कांग्रेस ने लोकसभा सांसदों को जारी किया व्हिप

नई दिल्ली। पांच राज्यों में आगामी विधानसभा चुनाव के चलते कांग्रेस अब एक्टिव मोड में नजर आ रही है। महंगाई के खिलाफ कांग्रेस एक बड़ी रैली करने जा रही है। कांग्रेस 12 दिसंबर को दिल्ली में महंगाई हटाओ रैली आयोजित करेगी। पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी और राहुल गांधी इस रैली को संबोधित करेंगे। इस बीच कांग्रेस ने अपने लोकसभा सांसदों को तीन पंक्तियों का व्हिप जारी किया है, जिसमें उन्हें 29 नवंबर को सदन में उपस्थित रहने और पार्टी के रुख का समर्थन करने के लिए कहा गया है।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने 29 नवंबर को विपक्षी दलों की बैठक बुलाई है। इससे पहले गुरुवार को कांग्रेस नेता पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी के आवास पर पार्टी के संसदीय रणनीति समूह की बैठक में उन मुद्दों पर चर्चा करने पहुंचे, जिन्हें पार्टी 29 नवंबर से शुरू हो रहे संसद के शीतकालीन सत्र में उठाएगी।

हमे आगे ले जाने में संविधान ने की मदद, अभी बहुत कुछ पाने की जरुरतः पीएम मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि संविधान ने देश को आगे ले जाने में मदद की, लेकिन अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। संविधान दिवस के अवसर पर विज्ञान भवन में बोलते हुए पीएम मोदी ने कहा कि सैकड़ों वर्षों की निर्भरता ने भारत को कई समस्याओं में धकेल दिया है। 26 नवंबर को संविधान दिवस के मौके पर दिल्ली के विज्ञान भवन में कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, ₹भारत जिसे कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था, गरीबी, भुखमरी और बीमारियों से पीड़ित हुआ। उस वक्त संविधान ने राष्ट्र को आगे बढ़ाने में हमारी मदद की। उन्होंने कहा, ₹हमारे संविधान निमार्ताओं ने हमें आजादी के लिए जीने और मरने वाले लोगों द्वारा देखे गए सपनों

को साकार किया और भारत की हजारों साल पुरानी महान परंपराओं को संजोते हुए संविधान दिया।

पीएम मोदी ने कहा कि अन्य राष्ट्रों के साथ स्वतंत्र होने के बाद भी भारत उन देशों की तुलना में बहुत पीछे है। इसका मतलब साफ है कि बहुत सी चीजें अभी भी हैं जिन्हें आगे ले जाने की जरुरत है। पीएम ने आगे कहा कि हकीकत यह है कि आजादी के दशकों बाद भी देश में लोगों के एक बड़े वर्ग को बहिष्कार का शिकार होना पड़ा।

उन्होंने कहा, ₹ऐसे करोड़ों लोगों के घर में शौचालय तक नहीं था। वे पानी और बिजली जैसी बुनियादी जरुरतों के अभाव में जी रहे थे।

उन्होंने कहा कि जबकि कोई भी राष्ट्र सीधे तौर पर दूसरे देश के उपनिवेश के रूप में मौजूद नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि औपनिवेशिक मानसिकता का अंत हो गया है। यह मानसिकता कई विकृतियों को जन्म दे रही है। हम विकासशील देशों की यात्रा में आने वाली बाधाओं में इसका स्पष्ट उदाहरण देख सकते हैं।

वर में लोकतंत्र पर चर्चा में शामिल हो सकते हैं पीएम मोदी, चीन को नहीं मिला न्योता

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने समिट फॉर डेमोक्रेसी के लिए भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को निमंत्रण भेजा है। सूत्रों के मुताबिक पीएम मोदी इस कार्यक्रम में वर्चुअली भाग लेंगे। वहीं, चीन को इस बैठक में निमंत्रण नहीं भेजा गया। इसके उलट ताइवान, पाकिस्तान समेत 110 देशों को इस बैठक में हिस्सा लेने का निमंत्रण मिला है। चीन इस बैठक का न्योता न मिलने से नाराज है। आगामी 10 दिसंबर को पीएम नरेंद्र मोदी अमेरिका द्वारा आयोजित समिट फॉर डेमोक्रेसी में हिस्सा ले सकते हैं। भारतीय अधिकारियों ने दावा किया है कि व्हाइट हाउस की तरफ से पीएम मोदी को 9 और 10 दिसंबर के बीच समिट फॉर डेमोक्रेसी में हिस्सा लेने के लिए निमंत्रण मिला है। इस बैठक में करीब 110 देश हिस्सा ले रहे हैं। ये वे देश हैं जहां लोकतांत्रित सरकारें शासन कर रही हैं।

संसद सत्र के पहले ही दिन कृषि कानून वापस लेने की तैयारी तेज, सांसदों को व्हिप जारी

नई दिल्ली। तीनों नए कृषि कानूनों को रद करने के लिए संसद के शीत सत्र के पहले ही दिन लोकसभा से पारित कराने की सरकार ने तैयारी शुरू कर दी है। इस क्रम में राजग और भाजपा के सभी सांसदों को व्हिप जारी किया जा रहा है। केंद्र सरकार कृषि कानूनों को पहले ही दिन रद कर आंदोलनकारी किसानों की सबसे बड़ी मांग पूरा करना चाहती है। सरकार इस कदम के जरिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किसानों से 19 नवंबर को किए गए वादे को पूरा करेगी। कृषि कानूनों की वापसी से संबंधित तीनों विधेयक सोमवार से शुरू हो रहे शीत सत्र के पहले ही दिन कार्यसूची में शामिल करने की विधायी प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

भाजपा के सांसदों को पार्टी के चीफ व्हिप राकेश सिंह की ओर से उस दिन अनिवार्य से सदन में उपस्थित रहने के लिए निर्देश जारी किया जा रहा है। कृषि कानूनों की वापसी का विधेयक पारित कराने में विपक्षी दल कोई अड़ंगा लगाएंगे इसकी गुंजाइश नहीं है। किसान आंदोलन का शुरू से समर्थन करता आ रहा विपक्ष तीनों कानूनों की वापसी की मांग पर अड़ा था। कृषि कानूनों की वापसी संबंधी तीनों विधेयकों पर केंद्रीय कैबिनेट बुधवार को ही मुहर लगा दी थी।

संसदीय प्रक्रिया की सामान्य परंपरा के अनुसार कानूनों की वापसी के लिए अमूमन विधेयक उसी सदन में पेश किया जाता है जिस सदन में यह पहले पारित हुआ हो। कृषि कानूनों को पिछले वर्ष सबसे पहले लोकसभा में ही पेश और पारित किया गया था। उसके बाद राज्यसभा में भारी हंगामे के बीच उन्हें पारित किया गया। इस हिसाब से कृषि कानूनों की वापसी संबंधी विधेयक पहले लोकसभा में पेश होने हैं। हालांकि सरकार पर कोई बंदिश नहीं है। वह चाहे तो पहले राज्यसभा का रास्ता भी चुन सकती है। मगर सदन में बड़े संख्या बल को देखते हुए सरकार के लिए पहले लोकसभा का विकल्प अधिक उपयुक्त है।

मायावती ने बीजेपी पर हमला, कहा- संविधान का पालन नहीं कर रहीं सरकारें

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने शुक्रवार को संविधान दिवस के मौके पर केंद्र और राज्य की सरकारों पर संविधान की अनदेखी का आरोप लगाते हुए कहा कि उनकी पार्टी संविधान दिवस पर होने वाले कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं लेगी।

मीडिया से बातचीत में बसपा प्रमुख ने कहा कि आज संविधान दिवस के मौके पर केंद्र और सभी राज्य सरकारें इस बात की गहन समीक्षा करें कि क्या ये सरकारें भारतीय संविधान का पूरी निष्ठा से पालन कर रही हैं। हमारी पार्टी का मानना है कि ये सरकारें संविधान का पालन नहीं कर रही हैं। इसलिए हमारी पार्टी ने केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं लेने का फैसला किया है। उन्होंने आरोप लगाया, ह्लकेंद्र और राज्य की सरकारों द्वारा संविधान का पालन नहीं किया जा रहा है। ऐसी सरकारों को संविधान दिवस मनाने का नैतिक अधिकार नहीं है, बल्कि ऐसी सरकारों को आज इस मौके पर लोगों से माफी मांगनी चाहिए और अपनी कमी को जल्द दूर करना चाहिए। अनुसूचित जाति-जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के हक की बात करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, ह्ल संविधान में शिक्षा एवं सरकारी नौकरियों में आरक्षण व अन्य जरूरी सुविधाओं का प्रावधान किया है।

दुर्ग सुपरफास्ट एक्सप्रेस के चार एसी कोच में आग

ग्वालियर। मध्यप्रदेश में मुरैना के हेतमपुर के पास चलती ट्रेन में आग लगने की खबर है। हादसा, उधमपुर से दुर्ग जा रह दुर्ग सुपरफास्ट एक्सप्रेस में शुक्रवार तीन बजे के करीब हुआ। मुरैना के हेतमपुर के पास के करीब चार एसी कोचों में आग लग गई। आग लगने के बाद ट्रेन को हेतमपुर स्टेशन के पास रोक दिया गया। हालांकि जल्दी ही कोचों को अन्य कोचों से अलग कर दिया गया। साथ ही आग को बुझाने के लिए मुरैना व धौलपुर से फायरब्रिगेड भी बुलाई गई है। खबर लिखे जाने तक आग पर काबू पा लिया गया था। लेकिन अभी तक यह पता नहीं चल सका है कि आग किस वजह से लगी। खासबात यह है कि हादसे में सभी ट्रेन यात्री सुरक्षित हैं। बताया जाता है कि आग लगने के बाद कुछ यात्री दहशत में चलती रेल की खिड़कियों से बाहर

कूद गए। कोचों में लगी आग को बुझाने का प्रयास फायरब्रिगेड कर रही हैं। ट्रेन में आग की सूचना पाकर मौके पर पुलिस, प्रशासन सहित रेलवे के अफसर पहुंच गए हैं। अभी तक आग लगने के कारणों का पता नहीं लगा है। हालांकि शार्टसर्किट होने की आशंका जताई जा रही है। साथ ही अभी तक यात्रियों के हताहत होने की कोई जानकारी भी नहीं मिली है। उधमपुर दुर्ग 20848 ट्रेन शुक्रवार को जब धौलपुर स्टेशन से गुजरी और चंबल पार कर मुरैना की तरफ बढ़ रही थी। तभी ट्रेन के ए1 व ए2 कोच में धुंआ निकलता हुआ दिखाई दिया। इसके बाद यात्रियों में चीखपुकार मच गई। लोको पायलट ने ट्रेन को हेतमपुर स्टेशन पर रोक दिया। हेतमपुर स्टेशन पर ट्रेन करीब 3 बजकर 3 मिनट पर पहुंची थी। ट्रेन के रुकते ही सभी यात्रियों को बाहर सुरक्षित निकाल लिया गया। ट्रेन में आग लगने की सूचना रेलवे कंट्रोल के पास पहले ही पहुंच गई थी। इसलिए मुरैना से दमकल वाहनों को मौके लिए रवाना कर दिया गया। मौके पर पहुंचकर दमकल वाहनों ने ट्रेन की आग को बुझाया। आग से ए1 व ए2 कोच पूरी तरह से जलकर राख हो गए। आग लगने की सूचना मिलते ही मुरैना व ग्वालियर से रेलवे के अफसर रवाना हो गए। अब आग लगने की जांच की जा रही है। हालांकि अभी कयास लगाए जा रहे हैं कि ट्रेन में शार्ट सर्किट की वजह से आग लगी है।

किसान नेताओं ने तोड़ा वादा, पर वापसी न करने वालों पर अब हो ऐक्शन, मोदी के मंत्री की मांग

नईदिल्ली। अगर किसान घर वापस नहीं जा रहे हैं तो उनपर कड़ी कार्रवाई जाए। यह मांग की है केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले ने। भले ही केंद्र सरकार ने तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने का ऐलान कर दिया हो लेकिन किसान टरढ पर नया कानून बनाने की मांग को लेकर अड़े हुए हैं और उनका आंदोलन अभी भी जा रही है। लेकिन लगता है केंद्रीय मंत्री को किसानों का यह आंदोलन रास नहीं आया है। शुक्रवार को केंद्रीय मंत्री ने आंदोलन नहीं खत्म कर रहे किसानों पर कड़ी कार्रवाई की मांग कर दी। एक बातचीत के दौरान रामदास अठावले ने कहा, किसान नेता कह रहे थे कि जब तक कानून वापस नहीं लिये जाते वो घर वापस नहीं जाएगं।

गोहरी गांव में पीड़ित परिवार से मुलाकात करने पहुंची प्रियंका गांधी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। फाफामऊ के गोहरी गांव में एक ही दलित परिवार के चार सदस्यों की हत्या के मामले ने शुक्रवार को सियासी रंग पकड़ लिया। पीड़ित परिवार के आंसू पोछने, न्याय दिलाने के सवाल पर सपा, बसपा, अपना दल के बाद कांग्रेस के नेताओं का दिन भर गांव में जमावड़ा लगा रहा। परिजनों से मिलने पहुंचीं कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी बाड्रा ने प्रदेश की कानून-व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाए। झकझोर देने वाली इस घटना पर उन्होंने योगी आदित्यनाथ सरकार को घेरते हुए कहा कि यूपी में अब बेटियां सुरक्षित नहीं रह गई हैं।

देर शाम घटनास्थल पर पहुंची प्रियंका गांधी बाड्रा के आगे परिजन बिलखते रहे। उन्होंने ढांढस बंधाया और इस नृसंश हत्याकांड के बाद पीड़ित परिवार का सहयोग देने का पुलिस पर आरोप लगाया। प्रियंका ने सवाल किया कि आखिर इन्हें न्याय क्यों नहीं मिल रहा है। उनका कहना था कि जिस तरह ये घटना हुई है, उससे वह खुद हिली हुई हैं। दलित परिवार दहशत में है। प्रियंका ने कहा कि इस मामले में अब तक सिर्फ दो पुलिस कर्मियों को हटाया गया। महिलाएं बताती

हैं कि जब वह शिकायत करने थाने पर जाती थीं, तो पुलिसकर्मी उनका मजाक उड़ाते थे। प्रशासन चुप कैसे हो सकता है। प्रियंका ने बताया कि परिवार दहशत में है। ये सभी महिलाएं हैं, पुरुष सदस्य झारखंड में काम करते हैं। वे नहीं जानते कि वे अकेले क्या करेंगे, कोई आकर उन्हें पीड़ा दे सकता है। प्रियंका ने आरोप लगाया कि पीड़ित परिवार को पुलिस से सहयोग नहीं मिल रहा है।

उन्होंनेने संविधान दिवस की याद दिलाते हुए कहा कि इस परिस्थिति को देखकर शासन और प्रशासन के लोग कैसे चुप रह सकते हैं। संविधान में लिखा है कि इस तरह के हादसे नहीं होने चाहिए। अगर होते हैं तो कार्रवाई होनी चाहिए। दलितों पर अत्याचार हो रहा है तो क्या सब ऐसे ही चुप बैठेंगे। इनसे पहले बसपा के जिलाध्यक्ष अभिषेक गौतम भी प्रतिनिधि मंडल के साथ गोहरी पहुंचे। सपा, अपना दल एस के भी नेताओं ने भी गोहरी पहुंचकर कातिलों की गिरफ्तारी के लिए आवाज उठाई।

यूपी आकर माहौल खराब कर रहे हैं ओवैसी, चुनाव आते ही जपने लगते हैं जिन्ना का माला : स्वतंत्रदेव सिंह

इकौना। भारतीय जनता पार्टी की ओर से शुक्रवार को देवीपाटन मंडल के कार्यकताओं के शिविर का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने कार्यकताओं को मिशन 2022 जीतने का तरीका बताया। कार्यक्रम से वापस जाते समय मीडियाकर्मियों से रूबरू स्वतंत्रदेव सिंह ने कहा कि भाजपा राष्ट्रवाद और विकास के मुद्दे पर अगला विधानसभा चुनाव लड़ेगी। सवालों का जवाब देते हुए स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि ओवैसी उत्तर प्रदेश में आकर माहौल खराब कर रहे हैं और चुनाव आते ही जिन्ना की माला जपने लगते हैं। उन्होंने कहा कि अगला चुनाव योगी और मोदी के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। विपक्षी कुछ भी कर लें। भाजपा फिर से सरकार बनाएगी और पहले से अधिक सीटें आएंगी। उन्होंने कहा कि यूपी में कानून का राज है। इसीलिए गुण्डे और माफिया जेल से बेल नहीं ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारा एजेण्डा साफ है और राष्ट्रवाद तथा विकास के मुद्दे पर चुनाव लड़ेंगे। इससे पहले श्रावस्ती के यूपीटी प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में पहुंचने पर भाजपा कार्यकताओं ने फूल माला से स्वागत किया।

एक साथ उठीं चार अर्थियां, ग्रामीणों की भी आंखें हुई नम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। फाफामऊ के गोहरी में मारे गए दंपति व दो बच्चों के शव अंतिम संस्कार के लिए दोपहर बाद फाफामऊ घाट पर ले जाए गए। इस दौरान एक साथ चार अर्थियां उठीं तो वहां मौजूद गांववालों की भी आंखें नम हो गईं। उधर परिजनों की चीत्कार से गांव में कोहराम मचा रहा। फाफामऊ घाट पर लालचंद ने भाई व अन्य परिजनों की चिताओं को मुखाग्नि दी तो उसकेआंसू छलक उठे। किसी तरह कांपते हाथों से उसने चारों शवों का अंतिम संस्कार किया।

सुबह 10.30 बजे पोस्टमार्टम हाउस से शव घर लाए गए तो वहां चीखपुकार मच गई। शवों को देखते ही परिजन फूट-फूटकर रोने लगे। परिवार की महिलाओं का रो-रोकर बुरा हाल था तो भाइयों व अन्य परिजनों की आंखों में भी आंसू थे। मौके पर जुटे गांववाले भी गमगीन दिखे। दोपहर बाद जब एक साथ चारों अर्थियां उठीं तो एक बार फिर चीखपुकार मच गई। परिजनों का करुण क्रंदन देखकर वहां मौजूद ग्रामीण भी अपने आंसू रोक नहीं पाए।किसी तरह नम आंखों से ही उन्होंने घरवालों को ढांढस बंधाया और तब जाकर अर्थियों को एंबुलेंस में रखकर फाफामऊ घाट पर ले जाया गया। घाट पर एक साथ परिवार के चार लोगों की चिताएं सजीं तो लोगों का कलेजा मुंह को आ गया। मृतक फूलचंद के बड़े भाई लालचंद ने कांपते हाथों से चिताओं को मुखाग्नि दी।

खबर संक्षेप

बिजली की कटौती से ग्रामीण परेशान

करछना। इन दिनो करछना क्षेत्र मे बेतरतीब विद्धुत कटौती से लोग परेशान है इससे जहा किसानो का कृषि कार्य प्रभावित हो रहा है वही व्यवसाइयो का व्यापार भी प्रभावित हो रहा है।बार बार विद्धुत कटौती के चलते लोगो को काफी दिक्कत का सामना करना पड रहा है जहा सरकार 18 से 20 घटे बिजल देने का वायदा कर रही है वही क्षेत्र मे 14 से 16 घटे बिजली मिलनी मुश्किल है।रोस्टिग और ट्रिपिग के चलते लोग आजिज आ चुके है शिकायत करने पर विभाग के लोगो द्वारा यह बताया जाता है कि अभी रोस्टिग है जिसका कोई समय निर्धारित न होने से यह समस्या और भी दिक्कत पैदा कर रही है बिजली कटौती से मोबाइल नेटवर्क भी प्रभावित होता है।लोगो मे विभाग के प्रति गहरी नाराजगी व्याप्त है।

अंग्रेज बहुतकुछ भारत से लूट लिए सिर्फ देश की संस्कृति और धर्म नहीं लूट पाए : डॉ. दिनेश शर्मा

अखंड भारत संदेश

दिनेश शर्मा ने कहा

- चुनाव आते ही कुछ लोग अपनी देश की संस्कृति और धर्म भूल जाते हैं
- पहले महिलाएं शौच क्रिया के लिए सूरज ढलने का करती थीं इंतजार
- भाजपा सरकार अंबेडकर के संविधान को कर रही साकार

संविधान दिवस पर आयोजित यात्रा एवं सभा झूंसी मे सम्मपन्न,नेताओ का लगा मजमा

मंच पर विराजमान केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर व उप मुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा को साफा व तलवार भेट करते।

प्रयागराज। भारतीय संविधान निमार्ता डॉ. भीमराव अंबेडकर की परिकल्पना अब साकार हो रही है। डॉ.साहब और पंडित दीन दयाल उपाध्याय के सपनो का भारत मोदी और योगी बना रहे है। पूर्व की सरकारों में चारों तरफ अव्यवस्था और मूलभूत सुविधाओं की कमी थी। महिलाओ को शौच क्रिया के लिए सूरज ढलने का इंतजार करना पड़ता था। इस पीड़ा को अगर किसी ने समझा तो भाजपा सरकार के मुखिया ने समझी। जिसके द्वारा भाजपा सरकार ने लगातार गरीबो को शौचालय, आवास, निरंतर घर-घर पहुचानें की कार्य कर रही है। उक्त बातें भारतीय संविधान दिवस एवं वीरांगना उदा देवी पासी शहादत समारोह झूंसी पर मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री डॉ.दिनेश शर्मा ने कही और आगे बताया कि पहले लोग बिजली और पानी के लिए इंजीनियर के पास जाते थे। और आज भाजपा की सरकार में इंजिनियर स्वयं लोगो के घर-घर जाकर विद्युत और पानी का कनेक्शन दे रहे है। महिलाओ को सरकार ने मुफ्त में रसोई गैस बाटने का कार्य कर रही है। पहले लोग वारिश के पानी से खेती पर निर्भर थे लोग बारिश होने के लिए इंद्रदेव को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न उपाय करते थे। मोदी-योगी सरकार ने गांव-गांव नहरों ट्यूबेल द्वारा फसलो के सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध करा रही है। यही नहीं किसानो को सम्मान निधि योजना द्वारा लाभान्वित कर रही है। आगे डॉ.शर्मा ने कहा कि महिलाओ की सुरक्षा और सम्मान के लिए नारी मिशन सहित कई योजनाएं बना महिलाओ को सुरक्षा दे रही है योगी सरकार। वीरांगना उधा देवी पासी की शहादत को प्रणाम करते हुए कहा कि उधा देवी ने अग्रेज के 32 सैनिकों को मौत के घाट उतारा और बाद में गोली खत्म होने पर अग्रेजों ने उनको गोली से छलनी कर दिया। अंतिम समय तक वह भारत माता की जय बोलती रही। ऐसे वीरांगना को हम नमन करते है। 1857 से लेकर 1947 के बीच 6 लाख 32 हजार लोगों ने देश को आजाद करने के लिए कुबार्नी इस लिए दी कि देश के नागरिक को समान अधिकार और समान दर्जा मिल सके। जो पिछली सरकार आज तक नहीं दे पाई आज उसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूरा कर रही है। विपक्षियों का बगैर नाम लिए तंज कसते हुए कहा कि चुनाव आते ही कुछ लोग अपनी संस्कृति और धर्म भूल जाते हैं। उन्हें यह पता नहीं कि अंग्रेज सबकुछ भारत से लूट लिए सिर्फ देश की संस्कृति और धर्म नहीं लूट पाए। विशिष्ट अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर ने वीरांगना उदा देवी पासी की शहादत को श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि बाबा भीमराव अंबेडकर ने संविधान का निर्माण कर वोट देने का अधिकार, मौलिक अधिकार,देशवासी को जीने का अधिकार, जुल्म के खिलाफ लोकतान्त्रिक तरीके से धरना प्रदर्शन करने का अधिकार दिया है। आगे कहा कि अनूसूचित जाति का भाजपा में बराबर भागीदारी और सम्मान है। भाजपा सरकार भीम राव अंबेडकर के सविधान को आज पूरा कर रही है। भारतीय संविधान दिवस एवं वीरांगना उदा देवी पासी शहादत सामारोह यात्रा एवं सम्मेलन समारोह हेतु लखनउ मे प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह द्वारा हरी झंडी दिखाकर यात्रा को पीजीआई लखनऊ सड़क मार्ग द्वारा केंद्रीय राज्य मंत्री आवास एवं शहरी मंत्रालय कौशल किशोर के नेतृत्व में 1008 वाहनों द्वारा प्रयागराज के लिए रवाना हुई। समय से यात्रा बारह बजे के बाद त्रिवेणी पुरम पहुंची। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय जनता पार्टी यमुनापार के जिला अध्यक्ष विभव नाथ भारती ने करते हुए कहा कि वास्तव में बाबा भीम राव अंबेडकर के द्वारा बनाए गए संविधान के अनुसार अब अनुसूचित जाति का सम्मान और उत्थान हो रहा है। सभी अतिथियों का आभार जताते हुए कार्यक्रम समापन किया। मुख्य वक्ताओं मे सासंद बाराबंकी उपेंद्र रावत, वरिष्ठ नेता लक्ष्मी प्रसाद रावत, सांसद केशरी देवी पटेल, महापौर अभिलाषा गुप्ता, विधायक डॉ अजय कुमार, विधायक प्रवीण पटेल, महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी, विभूति नारायण सिंह, जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुवेर्दी, जिला सह मीडिया प्रभारी आर के शर्मा ने भी सविधान दिवस समारोह पर सभा को संबोधित किया। मुख्य अतिथि डॉ. दिनेश शर्मा, केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर आदि अतिथियों का जिलाध्यक्ष यमुनापार विभव नाथ भारती व अनूसूचित मोर्चा प्रदेश सह-कोषाध्यक्ष मनोज पासी ने कार्यकर्ताओ संग बड़ी माला पहना स्वागत अभिनंदन किया। एवं जिलाध्यक्ष विभव नाथ भारती ने अतिथियों को साफा पहनाकर शौर्य का प्रतीक तलवार भेंट किया।

कार्यक्रम के अंत में फाफामऊ में एक ह परिवार के चार लोगों की हुई निर्मम हत्या प शोक जताते हुए समस्त मंचस्थ अतिथियों एव सभा में मौजुद नागरिकों ने दो-दो मिनट मौन रहकर शोक व्यक्त किया। कार्यक्रम के संयोजक अनुसूचित मोर्चा के प्रदेश सह कोषाध्यक्ष मनोज पासी रहे व संचालन अनुसूचित मोर्चा के प्रदेश महामंत्री राम लखन रावत ने किया। इस अवसर पर अनुसूचित मोर्चा जिलाध्यक्ष यमुनापार राजमणि पासवान आशीष पासी, राजेश सोनकर, क्षेत्रिय उपाध्यक्ष कविराज, हरीश पासवान, राज सरोज, धीरज गहरवार, राम पाल सिंह आदि के साथ सैकड़ों की संख्या में लखनऊ से यात्रा में कार्यकर्ता स्थानीय नागरिक भाजप कार्यकर्त्ता एवं स्कूल के बच्चे सविधान सभा में उपस्थित रहे। इसके पूर्व सभा आगमन पर उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा को गार्ड आफ आनर की सलामी दी गई।

संविधान दिवस पर करछना ब्लाक में हास्य कवियो नें जमाई महफिल

कवियत्री साझी तिवारी काव्य पाठ करतीं एवं उपस्थित श्रोता गण

अखंड भारत संदेस

करछना। सविधान दिवस के मौके पर ब्लाक परिसर करछना मे अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया इस मौके पर सरस्वती और सविधान निमार्ता डा0भीमराव अम्डेकर के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी ने दीप प्रज्वलन के साथ शुभारभ किया। कवियो ने हास्य कविताओ से लोगो को जीभर गुदगुदाया।अध्यक्षता डा0 विष्णु सक्सेना और सचालन श्लेष गौतम ने किया।साक्षी तिवारी द्वारा प्रस्तुत वाणी वदना के उपरात डा0श्लेष गौतम ने हम तुम्हारे साथ चलना चाहते,मुल्क की सूरत बदलना चाहते है,साप जहरीले है जो भी इस चमन मे हम सभी के फन कुचलना चाहते है।वन्दना शुक्ला प्रेम दरिया नही समंदर है,प्रेम का बीज सबके के अदर है,प्रेम से जो दिल को जीत रहा मेरी नजरो मे वो सिकन्दर है।चर्चित हास्य कवि अखिलेश अपना दर्द बाटे या न बाटे पर हसी बाटे,भुलाकर सारे गम अपने सभी के सग खुशी बाटे।रवि चतुवेर्दी,प्रमोद पकज और बिहारी लाल अम्बर की कविता खूब सराही गई।अध्यक्षता करते रहे डा0 विष्णु सक्सेना रेत पर नाम लिखने से क्या फायदा,एक आई लहर कुछ बचेगा नही जैसे गीतो से श्रोताओ को मंत्रमुग्ध कर दिया।सयोजक रतनाकर तनहा और अजय प्रेमी ने भी कविताओ से खूब समा बाधी।इस मौके पर प्रधान पुरैनी सुरेश पाण्डेय, प्रधान हथसरा शिव गणेश पाटेल, समर जीत यादव उर्फ पंडा, चंद्र प्रकाश तिवारी कबरा, पूर्व ब्लाक प्रमुख विजय राज सिंह उर्फ राजू सिंह, प्रधान अंतहिया हिमांशु मिश्रा उर्फ बाबा, लालजी सिह,विजयराज सिह राजू,विनोद सिह कामेश द्विवेदी,कमले मिश्रा,राकेश सिह चिन्तामणि शुक्ल,इन्द्र प्रताप सिह,अजय सिह रिकू सिह,सजीव मिश्रा,राजेश शुक्ला समेत बडी सख्या मे लोग मौजूद रहे। आयोजक प्रधान संघ के ब्लाक अध्यक्ष प्रतिनिधि अवतार किशन सिह ने सभी कवियो अतिथियो के प्रति स्वागत आभार प्रकट किया।

बीएसए के औचक निरीक्षण में बेसिक शिक्षा की खुली पोल

- शुक्रवार पूर्वाह्न किया शंकरगढ़ के नौ विद्यालयों का निरीक्षण
- दो स्कूल बंद मिले
- 28 टीचर गैरहाजिर मिले
- नवंबर माह का वेतन काटने का आदेश

टीचर और बच्चों से सवाल-जवाब करते बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण तिवारी

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। पढ़ाई के निमित्त कोई भी अभिभावक अपने पाल्यों को परिषदीय विद्यालयों में क्यों नहीं भेजना चाहता, इसकी पोल शुक्रवार को बीएसए के निरीक्षण में खुली। औचक जांच को पहुंचे बीएसए को दो स्कूल बंद मिले और 28 शिक्षक, शिक्षामित्र गैरहाजिर रहे। जो स्कूल खुले थे, वहां पर बीएसए को ही (समयानुसार) प्रार्थना करवानी पड़ी।

निरीक्षण के दौरान बीएसए ने बच्चों से फल, फूल और रंगों के नाम पूछे, जिसे बच्चे नहीं बता पाए। इस पर बीएसए ने खासी हैरानी जाहिर करते हुए ह्यभाग्यविधाता शिक्षकोंह्ण को फटकार लगाई। चेताया कि इस तरह की लापरवाही किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं की जाएगी।

बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी ने शुक्रवार को विकास खंड शंकरगढ़ के नौ विद्यालयों का निरीक्षण किया। बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी सबसे पहले पूर्व मा. विद्यालय टकटई में 9.03 बजे पहुंचे, जहां अध्यापक जितेंद्र जायसवाल, अभयराज सिंह गैरहाजिर रहे। इसके बाद 9.07 बजे प्राथमिक विद्यालय पहुंचे, जहां नितेश कुमार त्रिपाठी, प्रियंका कटियार, पुष्पलता सिंह, शर्मिला, शिक्षामित्र नीलम सिंह, संजीव कुमार सिंह एक तरफ से गैरहाजिर रहे। सभी की गैरहाजिरी में बीएसए ने यहां प्रार्थना करवाई। इसके बाद बीएसए 9.13 बजे प्राइमरी अमगोंदर और पूर्व मा. आमगोंदर 9.18 बजे पहुंचे। दोनों स्कूलों में केवल दयाराम उपस्थित मिले, बाकी अनूपचंद्र, शिक्षामित्र कुसुम त्रिपाठी, संगीता सिंह, शिक्षक पद्माकर सिंह, ऋतु जायसवाल, वंदना गुप्ता गैरहाजिर रहीं। इसके बाद बीएसए का काफिला 9.26 बजे प्राथमिक विद्यालय मौहरा पहुंचा, जहां शिक्षामित्र राजनंदन उपस्थित मिले, जबकि एक महिला टीचर भागते-भागते पहुंची। बच्चों की संख्या कुल सात मिली। जबकि टीचर प्रतीक कुमार सिंह गैरहाजिर रहे। इसके बाद प्राथमिक विद्यालय अभयपुर पहुंचने पर ताला लटकता मिला। बाहर तीन बच्चे और रसोइया मिली। यहां तीन अध्यापक पुष्पराज सिंह, संजीव कुमार, शशिकांत पांडेय व शिक्षामित्र प्रतिभा सिंह गैरहाजिर रहीं। इसी तरह पूर्व माध्यमिक विद्यालय बिहरिया में भी कुछ टीचर ही मिले। टीचर शुभम और अनुदेशक आरती पटवा और शालिनी गायब मिलीं। शालिनी ने दो दिन की सीएल ली थी,लेकिन आज चौथे दिन भी स्कूल नहीं पहुंचीं। प्राथमिक विद्यालय छिपिया में 9.48 बजे पहुंचने पर स्कूल बंद मिला। स्कूल के बाहर पांच बच्चे खड़े थे। यहां दो टीचर और एक शिक्षामित्र गायब रहा। पूर्व माध्यमिक विद्यालय गाढ़ा कटरा में इंचार्ज प्रधानाध्यापक बृजेश सिंह, अर्चना गुप्ता, अनीता भारती मौजूद रहीं। व्यवस्था भी ठीक मिली, लेकिन बच्चों की संख्या काफी कम थी।

फल-फूल और रंगों का नाम नहीं बता पाए बच्चे

इसके बाद बीएसए कंपोजिट विद्यालय शंकरगढ़ पहुंचे, यहां प्राथमिक, उच्च प्राथमिक के साथ इंग्लिस मीडिएम विद्यालय का मुआयना किया। यहां की पढ़ाई व्यवस्था से खिन्न नजर आए। बच्चे फल-फूल और रंग (कलर) का नाम नहीं बता पाए। यह सवाल बीएसए ने कक्षा दो, तीन और पांच के बच्चों से पूछा था। बीएसए ने एबीसीडी भी सुनी। इस पर बीएसए ने सभी की जमकर क्लास ली।बीएसए ने कहा कि कमजोर बच्चों को अलग बैठाया जाए, उनकी तालीम पर विशेष फोकस किया जाए।

एक तिहाई से कम मिली उपस्थिति

इस कंपोजिट विद्यालय में इंचार्ज प्रधानाध्यापक वीरेंद्र सिंह के साथ नौ टीचर, दो शिक्षामित्र, दो अनुदेशक और एक प्रचारक को तैनात किया गया है, जबकि बच्चों की संख्या प्राइमरी में 423 और उच्च प्राथमिक में 209 है। आज बच्चों की उपस्थिति एक तिहाई से भी कम रही। इस पर भी बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण तिवारी ने नाराजगी व्यक्त की। विद्यालय से फारिग होने के उपरांत बेसिक शिक्षा अधिकारी ने बीआरसी कार्यालय का भी मुआयना किया और मौके पर उन्होंने आवश्यक दिशा निर्देश दिया।

जमीनी विवाद मे महिलाओं से अश्लीलता, अनजान बनी पुलिस

माण्डा। क्षेत्र के बरहा कला चौकी की रहने वाली सावित्री देवी ने मेजा सीओ अमीता सिंह को प्रार्थना पत्र देकर आरोपित किया है कि परिवारिक बंटवारे की जमीन को पडोसी शारदा पटेल पुत्र रामचन्द, लालचन्द पुत्र राजा राम पटेल दंबग किस्म के है। पीडिता के मुताबिक उक्त लोग जबरन उनके हिस्से की जमीन पर कब्जा करने के लिए पक्का निर्माण करा रहे है।साथ ही पुश्तैनी कुएं में कुडा डालकर पाटने में लगे हुए है।पीडिंता ने बताया कि इसका विरोध करने पर उपरोक्त दबंग अपने परिवार के साथ मारपीट एवम? भद्दी भद्दी गालियां देते है।और महिलाओ से अश्लीला हरकत करते है।पीडिंता ने माण्डा पुलिस की कार्यशैली से तंग आकर सीओ से न्याय की गुहार लगाई है।सूत्रो के मुताबिक माण्डा पुलिस की कार्यशैली को लेकर पीडिंता सहित ने जबरजस्त आक्रोश किया।

न्यूज झरोखा

स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष राष्ट्रीय पूजन अभियान द्वारा अमृत कलश यात्रा प्रतापपुर में पहुंची

प्रतापपुर। भारतीय स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष मे राष्ट्रीय पूजन अभियान द्वारा अमृत कलश यात्रा शुक्रवार को प्रतापपुर पहुंची।प्रतापपुर तिराहे पर मनोज सिंह आचार्य के नेतृत्व में श्री रामचंद्र गुप्ता, शिवकुमार जायसवाल, सतीशचंद्र मिश्रा, रविंद्र कुमार सिंह, पिंटू गुप्ता, राम बहादुर पाल, आशीष दुबे, विकास मोदनवाल सहित तमाम देशभक्त उपस्थित रहे' यह यात्रा प्रतापपुर ब्लॉक के सामने से होते हुए प्रतापपुर में एमजीएस निकेतन इंटर कॉलेज प्रतापपुर के मुख्य द्वार पर मनोज सिंह आचार्य, अवनीश जयसवाल, राकेश श्रीवास्तव, श्रीनाथ द्विवेदी, राजेंद्र सिंह, श्याम जी त्रिपाठी, अनिल यादव, अवधेश विश्वकर्मा, नीतू पांडेय, दिव्या सिंह, उदयभान यादव, शिवसागर सिंह संतोष केसरवानी, शुभम सोनी, प्रज्वल विश्वास सहित सभी छात्र एवं छात्राओं ने भारत माता की भव्य आरती उतारी।एवं देशभक्तों को याद किया तत्पश्चात संजय केसरी की दुकान पर राधेश्याम केसरवानी, प्रेमचंद केसरवानी, अशफीलाल केसरवानी, मोतीलाल सोनी, राजकुमार केसरी सहित तमाम से भक्तों ने भारत माता की आरती उतारी।इस अवसर पर ग्राम प्रधान मोहम्मद आरिफ भी यात्रा में सम्मिलित रहे'

नागरिक पीजी कालेज की छात्राओं ने पर्यावरण बचाने हेतु पेंटिंग बनाया

जंघई। पेंटिंग ईश्वरीय सृष्टि में अनंत सौन्दर्य समाया हुआ है। मनुष्य की सृजनात्मक प्रवृत्ति ने कला के विभिन्न आयामों को जन्म दिया। जैसे प्रकृति चित्रण, संयोजन, व्यक्ति चित्रण, छापा चित्रण तथा अमूर्त चित्रण आदि। दृश्य कला ही एक ऐसी विधा है, जिसमें प्रकृति में समाहित सौन्दर्य को स्मरणीय और आनंददायक बनाया जा सकता है। चित्रकार को अनन्त प्रकृति में से कुछ ही बिन्दु आकर्षित कर पाते हैं। इन आकर्षक बिन्दुओं को जब वह चित्र रूप में परिणित करता है, तो वह दृश्य चित्र कहलाता है। चित्रकार इसे जल रंग, तेल रंग, एक्रेलिक, पेस्टल, छापा कला के माध्यम से सृजित करता है।नागरिक पीजी कालेज जंघई एमए प्रथम वर्ष राजनीति शास्त्र की छात्रा प्रतिभा पांडेय पुत्री विनोद पांडेय निवासी जंघई पड़ान एवं बीए तृतीय वर्ष की छात्रा श्रद्धा तिवारी पुत्री राकेश तिवारी निवासी भोगीपुर सेमरी द्वारा महाविद्यालय में छात्र छात्राओं को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने हेतु पेंटिंग बनाया इस पेंटिंग में प्राकृतिक दृश्य दर्शाया गया है और इसमें हम देख सकते हैं कि पेड़ पौधे और नदी बनी हुई है इस पेंटिंग का उद्देश्य है कि पेड़ पौधे को कटाव से बचाएं और नदी तालाब बनाए ताकि जीव जंतु उस पेड़ के छाया में प्यासे जीव जंतु नदी के ठंडे पानी को पी सके।

भाजपा मंडल प्रतापपुर द्वारा चलाया गया सदस्यता अभियान

प्रतापपुर। प्रतापपुर मंडल द्वारा प्रतापपुर ब्लॉक के सामने गुरुवार को जिला पंचायत सदस्य अरविंद विश्वकर्मा के नेतृत्व में सदस्यता अभियान कैंप लगाकर चलाया गया। जिसमें मंडल अध्यक्ष प्रतापपुर आशुतोष त्रिपाठी ने उत्तर प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को जनता के बीच ले जाने के लिए कार्यकताओं को प्रेरित किया।कार्यक्रम में वक्ता के रूप में जिला सदस्यता प्रमुख संजय मिश्रा बनकटा ने कार्यकताओं को चुनाव के लिए कमर कसने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में कौशल सिंह मंडल कोषाध्यक्ष, प्रदीप मिश्रा मंडल उपाध्यक्ष, राजेंद्र सिंह, मंडल अध्यक्ष किसान मोर्चा सच्चिदानंद तिवारी, मंडल अध्यक्ष महिला मोर्चा दीपिका सिंह, महावीर मिश्रा, प्रदीप बिंद, दशरथ पटेल, विपिन चौधरी, सुरेंद्र बिंद, उदयकांत दुबे, प्रदीप तिवारी सहित तमाम लोग सदस्यता अभियान को सफल बनाने के लिए उपस्थित रहे।

शांति भंग में तीन अभियुक्त का हुआ चालान

सहसों। अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत शांति व्यवस्था को कायम रखने के लिए थरवई पुलिस ने शुक्रवार को 3 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर शांति भंग में चालान किया। जानकारी के अनुसार थाना थरवई के उप निरीक्षक रामकुमार यादव एवं हेड कांस्टेबल इसरार अहमद की टीम ने शुक्रवार को थाना क्षेत्र के रत्नेश मिश्रा पुत्र राम शिरोमणि मिश्रा 38 वर्षीय निवासी सिंगरामऊ, अजय कुमार पुत्र राजनाथ 25 वर्षीय निवासी मथुरा उर्फ पारनडीह एवं सत्येन्द्र कुमार पुत्र रामखेलावन 40 वर्षीय निवासी मथुरा उर्फ पारनडीह थाना थरवई को गिरफ्तार कर शांति भंग कानून व्यवस्था के अंतर्गत संबंधित धारा में निरुद्ध करते हुए विधिक कार्यवाही कर चालान किया।

लोगों के विकास के लिए जनाधार शक्ति पार्टी अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करेगी : विनोद पटेल

अखंड भारत संदेश

जनाधार शक्ति पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने विधानसभाओं में जनता से संवाद किया।

नैनी। जनाधार शक्ति पार्टी के उत्तर प्रदेश अध्यक्ष विनोद कुमार पटेल के नेतृत्व में गुरुवार को पदाधिकारियों व कार्यकताओं में राम बहादुर सरोज, पप्पू गौड़, रामपूजन, महेंद्र कुमार, राजेश सरोज सहित संघ प्रतापपुर, हंडिया, फूलपुर आदि ऐसे कई विधानसभा क्षेत्रों में जनता से संवाद कर उनसे उनके क्षेत्र से जुड़ी जमीनी स्तर समस्याओं को जाना और उन्होंने हर संभव उनकी समस्याओं का निवारण करने का विश्वास भी दिलाया। जनसंपर्क के दौरान लोगों ने सर्वाधिक रूप से जल-संकट, सड़क, स्ट्रीट लाईट आदि जैसी मूलभूत समस्याओं को दशार्या गया। प्रदेश अध्यक्ष विनोद कुमार पटेल ने क्षेत्रीय लोगों को पार्टी की ओर से विश्वास दिलाया कि समस्याओं का शीघ्रतापूर्वक समाधान किया जाएगा और आगे भी इसी प्रकार से तत्पर रहकर लोगों के विकास के लिए जनाधार शक्ति पार्टी अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करेगा। क्योंकि जनता की समस्या को समाप्त कर उनका विकास करना हमारा प्राथमिक धर्म है एवं उनकी सेवा करना ही हमारा कर्तव्य है। बता दें कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष आशीष दीक्षित के निर्देश पर उत्तर भारत के अध्यक्ष अखिलेश शुक्ल एवं मीडिया प्रभारी पीयूष द्विवेदी के नेतृत्व में प्रदेश के अलावा देश के कई हिस्सों में जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है।

दबंग पड़ोसी से त्रस्त बादल गंज गांव की महिलाएं पहुंची घूरपुर थाने

अखंड भारत संदेश

दबंग पड़ोसी से त्रस्त महिलाएं दिया घूरपुर थाने में शिकायत पत्र

घूरपुर। प्राप्त जानकारी के अनुसार बादल गंज गांव का एक छोटा सा पुरवा इरादतगंज की सरहद पर बसा हुआ है। महिलाओं के अनुसार गांव का राम चंद्र पटेल पुत्र राम सुमेर पटेल अपराधी प्रवृत्ति का आदमी है। शाम को कुछ अराजक तत्वों को अपने घर बैठता है उन्हीं के साथ शराब पीता है। शराब पीने के बाद गांव में घूम घूम कर गंदी गंदी गालियां देता है। गांव के रास्ते को अपना बताकर लोगों को आने जाने में भी गाली गुप्ता करता रहता है।रास्ते के बगल से गुजरी नाली गंदगी से पटी बज बजा रही है। सफाई कर्मी को साफ नहीं करने देता लाठी लेकर दौड़ा लेता है। मोहल्ले के लोग बोलते हैं तो सब को गाली देता है। गोली मार देने की धमकी देता है। इन्हीं सब बातों को लेकर बुधवार की रात में गांव के सभ्रांत नागरिक से विवाद कर लिया। जिसके बाद सुबह गांव की महिलाएं एकजुट होकर घूरपुर थाने पहुंची थानाध्यक्ष से मिलकर उक्त दबंग आदमी के उत्पातों से अवगत कराया। सामूहिक रूप से मोहल्ले की महिलाओं ने लिखित तहरीर देकर उक्त दबंग आदमी के खिलाफ कार्यवाही की मांग की।

खबर संक्षेप

करोड़ों के शेयर घोटाले में यस बैंक की याचिका खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने करोड़ों रुपये के शेयर घोटाले में यस बैंक के अधिकारियों के खिलाफ दाखिल प्राथमिकी में हस्तक्षेप करने से इंकार कर दिया है तथा याचिका खारिज कर दी है। कोर्ट ने बैंक में जमा शेयर अटैच किए जाने के जांच अधिकारी के नोटिस पर भी यह कहते हुए हस्तक्षेप से इंकार कर दिया कि याची के पास नोटिस के खिलाफ वैकल्पिक उपचार उपलब्ध है। लिहाजा कोर्ट मौजूदा हालात में अनुच्छेद 226 के तहत अपने क्षेत्राधिकार का उपयोग नहीं कर सकती है। यस बैंक की याचिका पर न्यायमूर्ति एमसी त्रिपाठी और न्यायमूर्ति सुभाष विद्यार्थी की पीठ ने सुनवाई की। यस बैंक की ओर से सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए पक्ष रखा जबकि राज्य सरकार का पक्ष अपर महाधिवक्ता मनीष गोयल और एजीए प्रथम एके संड ने रखा। शिकायतकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता जीएस चतुर्वेदी और नवीन सिन्हा ने पक्ष रखा। प्राथमिकी में आरोप है कि यस बैंक के अधिकारियों ने राज्य सभा सांसद डॉ. सुभाष चंद्रा पर दबाव बनाकर डीटीएच, वीडियोकॉन के आदि के शेयर में करोड़ों रुपये की रकम लगवाई। वादी का कहना है कि ऐसा न करने पर उसे बैंक से लिए लोन वापस करने और अन्य तरीके नुकसान की धमकी दी गई। उसे फर्जी कागजातों के जरिए रकम लगवाई गई। जिससे उसे करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ। इस मामले में नोएडा के थाना गौतमबुद्ध नगर सेक्टर 20 में यस बैंक के पूर्व चेयरमैन एमडी शाह राणा, वीडियो कॉन ग्रुप के सीएमडी वीएन धूत, यस बैंक ग्रुप के अध्यक्ष संजय बैठे आदि के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई।

चारों शवों को सड़क पर रखकर परिजनों ने किया हंगामा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। फाफामऊ क्षेत्र के गोहरी गांव में एक ही परिवार के चार लोगों की हत?या के बात शुक्रवार को पोस?टमार्टम के बाद शव लाया गया। परिवार के लोगों के साथ ग्रामीणों में आक्रोश था। वे अंतिम संस्कार को राजी नहीं हुए। पुलिस के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। साथ ही डीएम और एसएसपी को बुलाए जाने की बात पर अड़े। एसपी क्राइम और एडीएम वित्त वहां पहुंचे और स्वजनों को लिखित आश्वासन दिया। तब अंतिम संस्कार के लिए लोग राजी हुए। हालांकि एंबुलेंस से बाडी ले जाते समय फिर विरोध किया गया। मशक?कत के बाद पुलिस ने लोगों को समझा-बुझाकर शांत कराया। इसके बाद अंतिम संस्कार के लिए शव ले जाया गया। लिखित में मानी गई। जिला प्रशासन का कहना है कि नाम जल्दी 11 अभियुक्तों में आठ नामजद आरोपितों को पकड़ लिया गया है।

एसपी क्राइम व एडीएम वित्त ने स्वजनों को लिखित आश्वासन दिया तो माने लोग

गांव में सुरक्षा के दृष्टिगत पुलिस पीएसी के जवान तैनात

प्रशासन ने दिया परिजनों को 16 लाख का चेक

मृतक के परिजनों को पट्टे की जमीन स्वीकृत

बॉडी को ले जा रहे एंबुलेंस को ग्रामीणों ने रोका, गांव में मौजूद भीड़

पोस्टमार्टम हाउस पर परिजनों के साथ ग्रामीणों की लगी रही भीड़

पोस्टमार्टम हाउस पर परिजन के साथ ग्रामीणों की भीड़ लगी रही तथा मृतक दंपती और उसके दो बच्चों के शव का पोस्टमार्टम गुरुवार रात किया गया। लाशों को रात में स्वजनों को नहीं सौंपा गया, बल्कि शवों को पोस्टमार्टम हाउस में ही रखवा दिया गया। शुक्रवार सुबह दस बजे चारों शव को स्वजनों को सौंपा गया। एंबुलेंस से शवों को घर लाया गया तो लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। सभी घटना को लेकर आक्रोशित थे। पुलिस की लापरवाही को लेकर गुस्सा था। घरवालों और ग्रामीणों का साफ कहना था कि पुलिस की लापरवाही से इतनी बड़ी वारदात हुई है।

गांव में भारी संख्या में कई थानों की फोर्स के साथ पीएसी के जवान तैनात

गांव में सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर बड़ी संख्या में पुलिस और पीएसी के जवानों को तैनात किया गया है। एसपी गंगापार, सीओ और कई थाना प्रभारी भी यहां तैनात किए गए हैं। एलआइयू की टीम भी यहां लगी है, जो पल-पल की रिपोर्ट अधिकारियों को दे रही है।

सामूहिक हत्याकांड के राजफास को पुलिस की चार टीमें लगी

सामूहिक हत्याकांड के राजफाश के लिए पुलिस की चार टीमें के साथ ही क्राइम ब्रांच और एसटीएफ को भी लगाया गया है। अब तक पुलिस ने 30 से अधिक संदिग्धों को पूछताछ के लिए उठाया है। इसमें कई नामजद आरोपित भी शामिल हैं। इन सभी को अलग-अलग स्थानों पर रखा गया है। हालांकि, पुलिस अधिकारी अभी कुछ भी बताने को तैयार नहीं हैं। वे बस यही कह रहे हैं कि जांच चल रही है।

हिंदू छात्रावास अधिग्रहण को कार्यकारिणी की मंजूरी

प्रयागराज। 29 साल 11 महीने के लिए एक रुपये वार्षिक किराए पर हिन्दू हॉस्टल इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जिम्मे होगा। यह निर्णय शुक्रवार को कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव की अध्यक्षता में हुई गौरतलब है कि छात्रावास को विश्वविद्यालय की और अधिग्रहित करने का प्रस्ताव 25 साल से अधिक समय पहले सोसाइटी ने प्रस्तावित किया गया था। लेकिन इस दिशा में कोई प्रगति नही हुई थी। जब प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने कुलपति के रूप में पदभार संभाला तो सोसाइटी ने एक बार फिर से इस आशय का प्रस्ताव भेजा गया। कुलपति ने इसका त्वरित संज्ञान लेते हुए कार्यवाही शुरू की। छात्रावास परिसर अधिग्रहण से विश्वविद्यालय न सिर्फ इसको बेहतर रूप से प्रशासित कर सकता है और अन्य अकादमिक गतिविधियों के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकेगा। इस छात्रावास का निर्माण दूरदर्शी राष्ट्रवादी नेता महान शिक्षाविद् महामना मदन मोहन मालवीय ने पूरी तरह से दान के रूप में एकत्र किए गए 2.5 लाख रुपये की धनराशि से किया था। कार्य परिषद ने विश्वविद्यालय की ओर से सोसाइटी के संरक्षक न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने जो पहल की है वो विश्वविद्यालय की छात्र कल्याण और शैक्षणिक गतिविधियों के विस्तार और सुधार में मदद करेगा। हिंदू छात्रावास के पुराछात्र में पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा, राष्ट्रवादी नेता गोबिंद बल्लभ पंत, पूर्व प्रधान मंत्री चंद्रशेखर, कवि फिराक गोरखपुरी और सुमित्रानंदन पंत और नेपाल के पूर्व प्रधान मंत्री गिरिजा प्रसाद कोइराला शामिल हैं।

कृषि क्षेत्र में एक नई क्रांति है नैनो यूरिया : डॉ.उदय शंकर अवस्थी

प्रबंध निदेशक ने नैनो यूरिया को बताया पर्यावरण के लिए सुरक्षित, इफको की फूलपुर इकाई में अगले वर्ष नवम्बर से बनने लगेगी नैनो यूरिया

नैनो यूरिया की उपयोगिता बताने के साथ ही कुसुम पौध का रोपण करते प्रबंध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। किसानों के हित में इफको सदैव एक कदम आगे की सोच रखता हैं। किसान भाइयों को कम लागत में ही अपनी भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में मदद मिल सके। इसके लिए इफको ने नैनों यूरिया के उत्पादन के बाद नैनो डीएपी के उत्पादन में भी कदम बढाया है। जल्द ही नैनो यूरिया के साथ यह भी सहकारी समितियों व किसान सेवा केन्द्रो पर उपलब्ध रहेगा।

यह बातें इफको के प्रबंध निदेशक डा० उदय शंकर अवस्थी ने शुक्रवार को इफको कोरडेट के चौपाल में आयोजित प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि कही। नैनो फर्टिलाइजर की उपयोगिता एंव उसके महत्त्व के विषय में बताते हुए उन्होंने कहा कि नैनो यूरिया कृषि क्षेत्र में एक नई क्रांति है,यह किसानों की आय बढ़ाने वाला है तथा इससे सरकार की करोड़ो की सब्सिडी बचेगी जिसका हम अन्य विकास कार्य में इस्तेमाल कर सक सकते है। उन्होने बताया कि२ नैनो यूरिया के इस्तेमाल से किसानों का उत्पादन 8% बढ़ेगा। इसकी खरीद इफको की बेबसाइट के माध्यम से घर बैठे कर सकते है जिसमें परिवहन लागत भी नहीं जोड़ा जाएगा। साथ ही बताया कि नैनों यूरिया का प्रयोग करके किसान खुश हैं अगले वर्ष नवम्बर तक फूलपुर की इकाई में भी नैनो यूरिया का उत्पादन शुरू हो जाएगा। कार्यक्रम का कुशल संचालन जनसंपर्क अधिकारी संजय मिश्रा ने किया। इस अवसर पर इफको फूलपुर इकाई के कार्यकारी निदेशक संजय कुदेशिया, इफको ऑफिसर एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार मिश्र व महामंत्री स्वयं प्रकाश एंव इफको कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय एंव महामंत्री विनय यादव महाप्रबंधक गिरधर मिश्रा, संयुक्त महाप्रबंधक एमडी मिश्रा, संजय वैश्य, एस.के.सिंह, एस.के.शुक्ल, पीके सिंह, संजय भंडारी व प्रबंधक कार्मिक प्रशासन प्रमुख दानवीर सिंह मौजूद रहे।

कोरडेट के नीम तेल संयंत्र में बीज सफाई के प्लांट का किया उद्घाटन

इसके पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ. अवस्थी ने नीम तेल संयंत्र में नए नीम बीज की सफाई और डीहालिंग प्लांट का उद्घाटन किया। तत्पश्चात नवीनीकृत मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का फीता काटकर उद्घाटन किया। उद्यान विभाग में भ्रमण करते हुए श्री अवस्थी ने कुसुम पौध का रोपण भी किया। अपने तीन दिवसीय भ्रमण के दौरान उन्होंने ईकाई के सभी संयंत्रों का निरीक्षण कर देश हित के लिए और भी अच्छा करने की सलाह इफको के अधिकारियों को दी। मौके पर इफको उत्तर प्रदेश राज्य विपणन प्रबंधक अभिमन्यु राय ,कारडेट प्रबंध समिति सदस्य आर पी एस बघेल, कोरडेट प्रधानाचार्य डीपीएस तोमर एवं मुख्य प्रबंधक राजेंद्र यादव, डॉ हरि माधव शुक्ला डीके पांडे , श्रीमती सविता शुक्ला , एल एस पांडे, डॉ हरीश चंद्र ,कमरुज्जमा , पीके अग्रवाल ,नंद जी सहित कारडेट के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

इफको आगमन पर विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत किए प्रबंध निदेशक

संघ कार्यालय पदाधिकारियों ने किया जोरदार स्वागत

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। इफको के प्रबंध निदेशक डा० उदय शंकर अवस्थी ने इफको कर्मचारी संघ के कार्यालय जाकर संघ के सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों से मुलाकात की। अपने बीच इफको के एम डी को पाकर संघ के अध्यक्ष पंकज पांडे व महामंत्री विनय कुमार यादव की अगुवाई में समस्त कार्यकारिणी ने प्रबंध निदेशक को फूल मालाओं से जोरदार स्वागत किया। वहीं ऑफीसर्स एसोसिएशन के कार्यालय आगमन पर एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार मिश्र व महामंत्री स्वयं प्रकाश के साथ ही एसोसिएशन की कार्यकारिणी ने प्रबंध निदेशक को माला पहनाकर गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। मौके पर संगठन के पदाधिकारियों के साथ ही अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

प्रबंध निदेशक का स्वागत करते कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय व महामंत्री विनय यादव

रेलिया बैरन पिया को लिए जाई रे पर झूम उठे श्रोता

अवध की रोशन चौकी में यतीन्द्र मिश्र व मालिनी अवस्थी को सुनने के लिए जुटे रहे श्रोता

फूलपुर। प्रबंध निदेशक के तीन दिवसीय भ्रमण के दौरान गुरुवार शाम 7 बजे प्रसिद्ध लोक गायिका मालिनी अवस्थी और यतीन्द्र मिश्र का कार्यक्रम "अवध की रौशन चौकी" का आयोजन मुक्तांगन परिसर में समपन्न हुआ। जहां पर लोक गायिका मालिनी अवस्थी ने अपने गीतों के माध्यम से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। उनके द्वारा गाए गीत 'रेलिया बैरन पिया को लिए जाई रे, व इन्हीं लोगों ने ले लीना दुपट्टा मेरा पर दर्शक झूम उठे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रबंध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी एंव विशष्ट अतिथि श्रीमती रेखा अवस्थी थी। कार्यक्रम का शुभारंभ इफको के प्रबंध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम के अंत में प्रबंध निदेशक एंव श्रीमती रेखा अवस्थी की फोटो एल्बम व कुछ यादगार झलकियाँ प्रस्तुत की गई जिससे सबकी पुरानी यादें ताजा हो गई। समस्त इफको परिवार ने कार्यक्रम का आनंद लिया।धन्यवाद ज्ञापन इकाई प्रमुख संजय कुदेसिया ने दिया। कार्यक्रम में इकाई प्रमुख संजय कुदेसिया, इफको ऑफिसर एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार मिश्र व महामंत्री स्वयं प्रकाश एंव इफको कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय एंव महामंत्री विनय यादव, महाप्रबंधक गिरधर मिश्रा, संयुक्त महाप्रबंधक श्री एम.डी. मिश्र, संजय वैश्य, एस.के.सिंह,एस.के.शुकल,श्री पी.के. सिंह, संजय भंडारी व प्रबंधक कार्मिक एंव प्रशासन प्रमुख दान वीर सिंह तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

अनिश्चितकालीन आमरण अनशन जारी

अनशन के तीसरे दिन अनशन रत भारतीय किसान यूनियन के नेता

अखंड भारत संदेश

कोराव। भारतीय किसान यूनियन भानु द्वारा 24 नवंबर से ही अनिश्चितकालीन आमरण अनशन कोरांव तहसील प्रांगण में सोसाइटी,किसानों की मांगों को लेकर भारतीय किसान यूनियन भानु तहसील प्रांगण में राजू चौबे जिला अध्यक्ष एवं केके मिश्रा मंडल महामंत्री के नृत्य आमरण अनशन आप तीसरे दिन की जारी रहा । जहां एक तरफ अधिकारी अपने भ्रष्टाचार नीतियों में हैं वही किसान संगठन के पदाधिकारियों ने आर पार की लड़ाई लड़ने की राह पर चल दिए हैं और बताया गया कि अधिकारी समस्या सुनने के लिए तैयार नहीं है तो समाधान क्या करें लेकिन यह आमरण अनशन न्याय पाने तक जारी रहेगा वही 2 दिन से बिना भोजन के जिला अध्यक्ष राजू चौबे ने दबे स्वर में कहा कि हम भारत के लोकतांत्रिक संविधान पर विश्वास करने वाले लोग हैं हम अपने अधिक हक और अधिकार की लड़ाई लड़ते हुए दम तोड़ सकते हैं पर भ्रष्टाचार के खिलाफ झुक नहीं सकते । आंदोलन में प्रमुख रूप से ब्लॉक अध्यक्ष पुष्पराज शुक्ला मंडल सचिव प्रकाश सिंह पटेल युवा जिलाध्यक्ष पिंटू चौबे कमलेश मिश्रा मंगला कोल आदि मौजूद रहे।

वॉलीबाल के संरक्षक श्यामकांत शुक्ल का हुआ अभिनंदन

अखंड भारत संदेश

मेजा। डिस्ट्रिक्ट वॉलीबाल एसोसिएशन, प्रयागराज के संरक्षक श्यामकांत शुक्ला का अभिनंदन किया गया। गत दिवस स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय नैनी के जोइंट रजिस्ट्रार प्रो. सी.जे.वैशली एवं रामप्रवेश राय,पुलिस क्षेत्राधिकारी महोबा के मुख्य आतिथ्य में जिला वालीबाल संघ,प्रयागराज द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह में जिले के कई भूतपूर्व, वरिष्ठ व वर्तमान खिलाड़ी तथा एसोसिएशन के पदाधिकारी उपस्थित रहे। एसोसिएशन के महासचिव आर.पी. शुक्ला ने श्यामकांत शुक्ला के जीवन पर प्रकाश डाला तथा अंतरराष्ट्रीय वॉलीबाल खिलाड़ी जॉर्डन. एच. नाथ ने श्री शुक्ला जी को राजस्थानी पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया। एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रभात कुमार राय ने संरक्षक महोदय को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका स्वागत किया।

वॉलीबाल के संरक्षक श्याम कांत शुक्ल का अभिनंदन एवं स्वागत करते

उसी क्रम में एसोसिएशन के संगठन मंत्री प्रमोद कुमार राय एवं संयुक्त मंत्री पंकज शुक्ला ने क्रमशः प्रतीक पुष्प व अंग वस्त्र भेंट कर उनका अभिनंदन किया। \

श्री शुक्ला भारत दूरसंचार विभाग में महाप्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं तथा वर्तमान में समाज सेवा के कार्यों में जुटे हुए हैं। श्याम कांत शुक्ला ने अपनी पूरी शिक्षा-दीक्षा भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय व मेजा क्षेत्र के बामपुर व महेवा कॉलेज से पूरी की थी। वर्तमान में शुक्ला जी अपने प्रतिष्ठान अष्टविनायक के माध्यम से कारोबार में संलिप्त होने के साथ-साथ सामाजिक सेवा से जुड़े हुए हैं और सामाजिक कार्यों के साथ-साथ धार्मिक कार्य व खेलकूद आदि में भी रूचि ले रहे हैं। श्यामकांत शुक्ला ने विगत दिवस जमुनापार क्षेत्र के वालीबाल खेल को बढ़ावा दिए जाने के उद्देश्य से वॉलीबाल क्लबो की स्थापना व खेल आयोजन में सहयोग प्रदान कर रहे है। साथ ही साथ डीवीए प्रयागराज के माध्यम से चयनित कुल आठ टीमों के जूनियर खिलाड़ियों को गोंद लेकर एक ऐतिहासिक मिशाल कायम किया है। उक्त अवसर पर प्रो.देवी सिंह पटेल, बदरुल हसन जैदी, के.बी.एल. श्रीवास्तव, रामाश्रय राय, हरिशंकर सिंह, विमल पांडेय, रविकांत यादव, फूलचंद गुप्ता, सतेंद्र पांडेय, रणविजय सिंह, प्रभाकर चौबे, ठाकुर प्रसाद, आशीष मैसी, बागीश द्विवेदी,आनंद शर्मा, आई.बी. सिन्हा, मुकेश शुक्ला, बाबा गिरी, संतोष भास्कर, असफाक अहमद, कार्तिकेय तिवारी, रवि वर्मा, विकास बाल्मीकि आदि वॉलीबाल खिलाड़ियों द्वारा गुलदस्ता व बुके आदि देकर उनका अभिनंदन किया गया।

दलित आदिवासियों का एसडीएम बारा के समक्ष प्रदर्शन, सौपा ज्ञापन

बारा। तहसील अंतर्गत शुक्रवार को संविधान दिवस (26 नवम्बर 1949) की 72वीं वर्षगाँठ के पावन अवसर पर कार्यालय उप जिलाधिकारी बारा के समक्ष विधानसभा बारा क्षेत्र के सैकड़ो गांवो के हजारों की संख्या में भूमिहीन दलितों, आदिवासियों ने बसपा मिशन- 2022, जय भीम-पांच एकड़ और हर बूथ दस यूथ जोड़ो अभियान के तहत संविधान बचाओ चेतना रैली आयोजित की गयी। रैली के माध्यम से प्रदेश के मुख्यमंत्री को सम्बोधित पाँच सूत्रीय ज्ञापन उप जिलाधिकारी को सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से भूमिहीन दलित आदिवासियों ने मांग की है कि समाज कल्याण विभाग द्वारा वर्ष 1979-80 के दौरान दलितों आदिवासियों के आर्थिक विकास हेतु जमीन तो खरीदी किन्तु बाँटी नहीं गयी। यदा कदा जहाँ भी जमीनें बाँटी भी तो कागजात में तो दलितों -आदिवासियों के नाम हैं ' बावजूद इसके जमीन जिस विक्रेता की थी उसी के कब्जे में आज भी है। आज भी विक्रेता ही विक्रय की गयी जमीन को जोतते बोते चले आ रहे है। रैली में अभय राज दीपांकर, दिनेश कुमार, शास्त्री मुनिशंकर दीपांकर, बृजभान, वाशुदेव, कमलेश कुमार, हेमराज, बृजेश गौतम, जय राम, अजीत कुमार सिंह, बहादुर कोल, शिवजग, पुष्प राज, अजय कुमार, मनोज कुमार, सोमवारा, रूपा, पूनम, सुमन, गुलाब कली सहित सैकड़ों दलित आदिवासी सामिल रहे।

शुआट्स में मनाया गया संविधान दिवस

अखंड भारत संदेश

नैनी। शुक्रवार पेपर को आजादी के 75 वर्षगाठ पर अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित हुआ क्रार्यक्रम। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स), अपने 111वर्ष की इतिहास में संविधान दिवस को अमृत महोत्सव के रूप में अलंकृत किया। ज्ञातव्य हो कि 26 नवम्बर 1949 को ही देश की संविधान सभा ने वर्तमान संविधान को विधिवत रूप से अपनाया था। हालांकि इसे 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया था। इस अवसर पर प्रो0 (डा0) एस0बी0 लाल, प्रति कुलपति (प्रशासन) मुख्य अतिथि के रूप में अपने अधिभाषन में कहा कि साल 2015 में संविधान के निमार्ता डॉ0 भीमराव आंबेडकर के 125वें जयंती वर्ष के रूप में 26 नवंबर को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने इस दिवस को संविधान दिवस के रूप में मनाने के

केंद्र सरकार के फैसले को अधिसूचित किया था। संवैधानिक मूल्यों के प्रति नागरिकों में सम्मान की भावना को बढ़ावा देने के लिए यह दिवस मनाया जाता है। आजादी के 75 वर्षगाठ पर शुआट्स में इसे अमृत महोत्सव के उपलक्ष में अपने कार्य प्रणाली को संविधान के अनुरूप पालन करते है क्योंकि संविधान हमारे रीढ़ की हड्डी है जो हमें सभी उपक्रमों में सुरक्षा प्रदान करती है। उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज की तिरंगा उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह संविधान ही है जो हमें एक आजाद देश का आजाद नागरिक की भावना का एहसास कराता है। डा0 जी0एस0 शुक्ला, कुलसचिव - उ०प्र० राजश्री टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज ने संविधान दिवस पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हर भारतीय नागरिक राष्ट्र के विकास के लिए जिम्मेदार है एवं अपने कर्तव्यों का पालन संविधान के अनुरूप निस्तारित करने में सक्षम हो। उन्होंने चिन्ता जताई की कुछ भारतीय नागरीक वर्तमान में संविधान के परिप्रेक्ष कानून से अनभिज्ञ है।

कई स्थानों पर हुई भारत माता की आरती व पूजन

अमृत महोत्सव आयोजन समिति ने किया कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

अमृत महोत्सव आयोजन समिति प्रतापगढ़ द्वारा जिले के अलग-अलग स्थानों पर भारत माता की आरती और पूजन का कार्यक्रम भव्यता के साथ संपन्न किया गया। जिला संयोजक प्रभाशंकर पांडेय ने बताया कि पूजन कार्यक्रम के आरंभ में वंदे मातरम का गायन हुआ। इसके पश्चात भारत माता की आरती का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

उन्होंने बताया कि प्रत्येक स्थान पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति लोगों में अपार श्रद्धा, उत्साह का वातावरण है। अभियान के पालक अधिकारी डॉ सौरभ पांडेय ने अमृत महोत्सव आयोजन समिति की बैठक कर कार्यकताओं से अलग-अलग कार्यक्रमों के संदर्भ में विस्तार से चर्चा करते हुए उनके क्रियान्वयन के संदर्भ में प्रभावी विचार किया। इस अवसर पर

भारत माता की आरती उतारते करते अतिथिगण

अनामिका उपाध्याय, लक्ष्मी मिश्रा, अनीता पांडेय, डॉक्टर पीयूष कांत शर्मा, रमेश चंद्र त्रिपाठी, प्रभाशंकर पाण्डेय, चिंतामणि द्विवेदी, शिव शंकर सिंह, डॉ रंगनाथ शुक्ला, रमेश पटेल आदि लोग मौजूद रहे।

परियावां आलापुर समिति की वार्षिक निकाय बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के अन्तर्गत साधन सहकारी समिति परियावां व आलापुर में समिति की वार्षिक सामान्य निकाय की बैठक किसानों के साथ शुक्रवार को सम्पन्न हुई जिसमें सहायक विकास अधिकारी विजय सिंह (सह) ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सभी किसान समिति से जुड़कर योजनाओं का लाभ उठाएं और किसानों को ऋण लोन व फसल लोन के बारे में विधवत जानकारी दी। इस मौके पर आलापुर समिति अध्यक्ष अरविंद प्रताप सिंह, संजय कुमार श्रीवास्तव सचिव, अरुणेश कुमार, शशिमनी त्रिपाठी,जगराम यादव, समिति अध्यक्ष परियावा अरविंद प्रताप सिंह, सचिव अनूप कुमार, उपाध्यक्ष विजय किशोर अग्रहरि सहित किसान मौजूद रहे।

रेहान और अकिशा ने भरा सबसे लंबा फरार्टा

ब्लाक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाया दम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बीआरसी सुखपालनगर में बेसिक शिक्षा विभाग की सदर की ब्लाक स्तरीय प्रतियोगिता में बच्चों ने दमखम दिखाया। मुख्य अतिथि सदर विधायक राजकुमार पाल ने फीता काटकर खेल का उद्घाटन किया गया। उन्होंने कहा कि खेल से सर्वांगीण विकास होता है।

अध्यक्षता कर रहे विशिष्ट अतिथि प्रधान संघ सदर के अध्यक्ष ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि खेल से भाईचारा बढ़ता है। खंड शिक्षा अधिकारी मोहम्मद रिजवान खान ने अतिथियों का स्वागत किया। कहा कि शिक्षा के साथ खेल भी होना चाहिये। संविलियन स्कूल सुखपालनगर के बच्चों ने सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत किया। पचास मीटर दौड़ प्राथमिक में रेहान प्रथम, उज्ज्वल सेकेंड और ओम मौर्य थर्ड आये। बालिका में अकिशा प्रथम, खुशी सरोज सेकेंड रही। 100 मीटर बालक में मुकेश प्रथम, अरुणेंद्र सेकेंड और नितिन तीसरे स्थान पर रहे। बालिका में अंकिता सिंह पहले, शैलजा दूसरे और खुशी सरोज तीसरे स्थान पर रही। उच्च प्राथमिक में सौ मीटर दौड़ बालक में रेहान प्रथम, अयाज दूसरे और शुभम तीसरे स्थान पर रहे। बालिका में अंतिमा पहले, अंजली सिंह दूसरे और कुमकुम तीसरे स्थान पर रही। खेल के निर्णायक ब्लाक खेल टीचर शैलेश सिंह शैलू और सहायक अध्यापक राजेश कुमार रहे। ब्लाक अध्यक्ष प्रभाकर प्रताप सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन राजेश कुमार सिंह ने किया। इस मौके पर दिलीप कुमार, ज्ञानेश शर्मा, नीरज सिंह, सुमन सिंह, प्राची पांडेय, लक्ष्मी सिंह, शोभा देवी, विजय कुमारी, अजय सिंह समेत कई शिक्षक और शिक्षिकाएं मौजूद रही।

युवक को बचाने में बाइक सवार ट्रक में घुसा, घायल

प्रतापगढ़। युवक को बचाने के चक्कर में बाइक सवार ट्रक में घुसा जिससे उसे गंभीर चोटें आई। इलाज के लिये जिला अस्पताल ले जाया गया है। नगर कोतवाली क्षेत्र के भुपियामऊ चैराहे पर खड़े ट्रक में युवक पीछे से घुस गया जिससे उसे गंभीर चोटें आई जिसे उपचार हेतु स्थानीय लोगों तथा पुलिस की मदद से जिला अस्पताल ले जाया गया।

ट्रैक्टर रैली 28 को, मुख्य अतिथि होंगे कैबिनेट मंत्री

पट्टी, प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा की तरफ से ट्रैक्टर रैली 28 नवंबर को आसपुर देवसरा ब्लाक परिसर से निकाली जाएगी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह होंगे। इस संबंध में शुक्रवार को ब्लॉक पट्टी में किसान मोर्चा की एक बैठक आयोजित की गई जिसमें निर्णय लिया गया कि ट्रैक्टर रैली आसपुर देवसरा ब्लाक परिसर से निकलकर दाउदपुर बाजार गौरामाफी से होते हुए अमरगढ़ बाजार में समाप्त की जाएगी। बैठक में मुख्य रूप से किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष विजय कुमार मिश्र, उपाध्यक्ष संजय सिंह, सेक्टर प्रभारी व जिला मंत्री पंकज सिंह, जिला उपाध्यक्ष पंकज मिश्रा, मंडल अध्यक्ष निरंजन सिंह, मंडल अध्यक्ष सूर्यपाल शर्मा, वैभव ओझा, चेयरमैन के खेदनलाल जायसवाल, अशोक कुमार जायसवाल, पूर्व चेयरमैन जुग्गीलाल जायसवाल आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री रामचरित्र वर्मा ने किया।

संविधान दिवस पर डा0 अम्बेडकर सहित महापुरुषों के मूर्तियों की हुई धुलाई-सफाई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। संविधान दिवस के अवसर पर नगर पालिका ने अम्बेडकर चैराहे पर स्थित डा0 भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा की धुलाई व सफाई कर संविधान निमार्ता को नमन किया। इसी के साथ शहर के सभी चैराहों पर लगी चंद्रशेखर आजाद, महाराणा प्रताप, भगत सिंह, शिवाजी, पं0 मुनीश्वरदत्त उपाध्याय की मूर्तियों की भी धुलाई व सफाई की गई।

बता दें कि डा0 अम्बेडकर भारतीय संविधान के निमार्ता कहे जाते हैं तो पं0 मुनीश्वरदत्त उपाध्याय इसी संविधान निमार्ता समिति के सदस्य रहे हैं। दोनों की प्रतिमा शहर में लगी हुई है। डा0 अम्बेडकर की प्रतिमा अम्बेडकर चैराहे पर और पं0 मुनीश्वरदत्त की प्रतिमा टेज्जरी चैराहे पर लगी हुई है। दोनों संविधान निमार्ता समिति से जुडे. होने से आज यहां लोगों ने उनकी प्रतिमा को नमन किया। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के निर्देशन में संविधान दिवस पर डा0 अम्बेडकर व अन्य महापुरुषों की मूर्तियों का धुलाई अभियान चलाया गया।

मूर्तियों की धुलाई करते नगर पालिका के सफाई कर्मचारी

इसके अलावा बलीपुर व विवेक नगर में मच्छरों का प्रजजन रोकने के लिये एंटी लार्वा का छिड़काव किया गया। जिला स्टेडियम में खेलकूद प्रतियोगिता शुरू होने से पहले नगर पालिका ने पूरे जिला स्टेडियम की साफ-सफाई की और मेहता पाठशाला में भी सफाई की गई। बताया जाता है कि मेहता पाठशाला में राम कथा शुरू होने वाली है।

सदस्यता अभियान में मौजूद जिलाध्यक्ष डा0 लालजी त्रिपाठी

जिला कांग्रेस कमेटी ने चलाया सदस्यता अभियान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर आम आदमी को कांग्रेस से जोड़ने के लिए आज जिला कांग्रेस कमेटी ने जिलाध्यक्ष डॉ0 लालजी त्रिपाठी के नेतृत्व में सदस्यता अभियान का श्रीगणेश कर दिया। पार्टी यह अभियान 26 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलाकर सदस्यता महाअभियान के जरिये एक करोड़ लोगों को सदस्य बनाएगी। इस अवसर पर मौजूद कांग्रेस जनों को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष डॉ0लालजी त्रिपाठी ने सभी कार्यकताओं को सदस्यता की कापी जारी करते हुए कहा कि सभी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन ईमानदारी के साथ करें, जिससे कि लक्ष्य को आसानी से हासिल किया जा सकें। इस अवसर पर डा0वी0के0सिंह, इरफान अली, वेदान्त तिवारी, डॉ0 नीरज त्रिपाठी, मनीष सिंह, अब्दुल रहमान, आशुतोष तिवारी, सरोज कश्यप, फतेह बहादुर सिंह, अजीत सिंह, रामधन यादव सहित अनेक कांग्रेस जन मौजूद रहे।

टीईटी की परीक्षा को कुशलतापूर्वक सम्पन्न कराने के लिये बैठक सम्पन्न

सभी स्टेटिक मजिस्ट्रेटों को दिये गये टिप्स

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2021 यानी टीईटी परीक्षा को सुचिता, पवित्रता एवं कुशलता के साथ जनपद प्रतापगढ़ में संपन्न कराने के लिए सुनील कुमार शुक्ला अपर जिला अधिकारी प्रतापगढ़ की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई। बैठक में परीक्षा से संबंधित सभी स्टैटिक मजिस्ट्रेट पर्यवेक्षक एवं समस्त केंद्र स्थापक सम्मिलित हुए।

बैठक को संबोधित करते हुए अपर जिलाधिकारी ने कहा कि इस परीक्षा को हमको पूरी तरह से निष्पक्ष होकर पवित्रता एवं सुचिता के साथ संपन्न करानी है इसके लिए हर संभव व्यवस्था की गई

टीईटी की बैठक में मौजूद स्टेटिक मजिस्ट्रेट

है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ मोहम्मद अनीस ने बताया कि जनपद में प्रथम पाली में परीक्षा 43 केंद्रों पर संपन्न होगी और दूसरी पाली में 29 केंद्रों पर संपन्न होगी।

एमडीपीजी कालेज में एमकाम की आंतरिक परीक्षा सम्पन्न

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कॉलेज में नई शिक्षा नीति के अंतर्गत एमकॉम प्रथम सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं की आंतरिक परीक्षा आज वाणिज्य संकाय में संपन्न हुई। परीक्षा में नामांकित 60 विद्यार्थियों में 53 परीक्षार्थी उपस्थित रहे। 7 परीक्षार्थी परीक्षा में शामिल नहीं हुए। महाविद्यालय के जन सूचना अधिकारी डॉ सी एन पांडे बताया कि आज प्रथम एवं द्वितीय प्रश्नपत्र की परीक्षा कराई गई। परीक्षा में विभाग के शिक्षक डॉ बलराज मिश्र, डॉ मृदुल उपाध्याय, सभाजीत यादव तथा अनाथ शेट्टी ने सहयोग किया। डॉ पांडे ने बताया कि बीए प्रथम वर्ष प्राचीन इतिहास प्रथम प्रश्न पत्र की परीक्षा 29 नवंबर को प्रातः दस बजे से तथा द्वितीय प्रश्न पत्र की परीक्षा 30 नवंबर को प्रातः दस बजे से होगी।

रेलवे स्टेशन पर मां बाराही धाम का शिलापट्ट हुआ अंकित

सांसद व विधायक ने हाईमास्ट व पिंक टॉयलेट का किया लोकार्पण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। दांदूपुर रेलवे स्टेशन का नाम माँ वाराही देवी धाम किये जाने का सर्कुलर जारी होने के पश्चात शुक्रवार को सासंद संगम लाल गुप्ता, क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा, मण्डल वाणिज्य प्रबंधक प्रतीक श्रीवास्तव व वरिष्ठ मण्डल अभियंता वी.के. तलवार की उपस्थिति में रेलवे स्टेशन का नाम माँ वाराही धाम शिलापट्ट पर अंकित किया गया।

इस दौरान आयोजित कार्यक्रम में सांसद ने कहा कि रानीगंज क्षेत्र के चैहजन अवस्थित शक्ति पीठ माँ वाराही देवी के महात्म्य को दृष्टिगत रखते हुए दांदूपुर स्टेशन का नाम माँ वाराही देवी धाम किये जाने से पर्यटन मानचित्र पर धाम का प्रचार प्रसार होने के साथ स्टेशन पर सुविधाओं का विस्तार होगा। क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा ने कहा कि 51 शक्ति पीठो में एक माँ वाराही देवी जिनकी महिमा दुर्गा सप्तशती एवं हमारे अन्य धर्म ग्रंथों में आयु की रक्षा करने वाली देवी के रूप में मिलता है।

रेलवे स्टेशन पर मां बाराही धाम के शिलापट्ट के साथ सांसद व विधायक

उन्होंने कहा कि रानीगंज क्षेत्र का सतत एवं चहुमुखी विकास विकास भी होगा। इसके साथ ही सांसद, विधायक व नगर अध्यक्ष मीरा गुप्ता ने नगर पंचायत रानीगंज द्वारा स्टेशन परिसर में जन सुविधा की दृष्टि से हाई मास्ट लाइट का एवं पिंक टॉयलेट का लोकार्पण भी किया। इस दौरान जिला पंचायत सदस्य नीलम ईसान, नगर पंचायत अध्यक्ष मीरा गुप्ता, प्रमुख शिवगढ सत्यम ओझा, पूर्व प्रमुख गौरा राकेश सरोज, सहायक मण्डल अभियंता निहालुद्दीन आदि लोग मौजूद रहे।

चोरी गई ग्यारह बाइको को पुलिस ने की बरामद, दो गिरफ्तार

अर्न्तजनपदीय बाइकर्स गैंग का हुआ पदार्फाश

खंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने वाहन चोरी के अर्न्तजनपदीय एक बड़े गैंग का खुलासा करते हुए ग्यारह चोरी गई बाइकों को बरामद करने मे कामयाबी ली है। एसपी सतपाल अंतिल तथा एएसपी पश्चिमी रोहित मिश्र के निर्देशन मे अपराध नियंत्रण अभियान के तहत कोतवाली पुलिस को यह सफलता गुरूवार की रात आकस्मिक चेकिंग के दौरान हाथ लगी।

दबोचे गये गैंग मे पकड़ा गया कौशाम्बी जिले का एक आरोपी यहां किराये के मकान मे रहकर चोरी की वारदातों को अंजाम देता रहा। वहीं दूसरा आरोपी भी पड़ोस के मानिकपुर थाने का निकला। सीओ रामसूरत सोनकर ने कोतवाली मे पत्रकारों से रूबरू होते हुए बताया कि बीती पचीस नवंबर को कोतवाल कमलेश पाल पुलिस टीम के साथ गश्त पर थे। इस बीच भेभौरा तिराहे पर मुखबिरी सूचना पर पुलिस को दो वाहन चोर हाथ लग गये। जबकि एक वाहन चोर पुलिस को धता बता चोरी की बाइक छोड भाग निकला। सीओ के मुताबिक पकडे गये कौशाम्बी जिले के सैनी थाना के अफजलपुर सातो निवासी शिवप्रसाद मिश्र के पुत्र अभिषेक मिश्र उर्फ रोबिन मिश्र तथा मानिकपुर थाना के लाला बाजार निवासी चैधरी पटेल के पुत्र गोविंद पटेल की निशानदेही पर पुलिस ने ग्यारह बाइकें बरामद की है। पुलिस की पूछताछ के दौरान आरोपियो ने बाइक चोरी की घटनाओं को कबूलते हुए बताया कि अलग

एसपी ने टीम को पुरस्कृत किये जाने का किया ऐलान

अलग स्थानों से चोरी की गई बाइकें मानिकपुर थाना क्षेत्र के बरवौलिया गांव के समीप नहर के किनारे बने हुए श्मशान घाट के पीछे झाड़ियों मे रखी गयी है। पुलिस ने आरोपियो की निशानदेही पर चोरी गये ग्यारह बाइकों को बरामद कर लिया। सीओ ने बताया कि बरामद बाइकों मे हाल ही में नगर के प्रभा मैरिज लॉज व सरस्वती विद्या मंदिर से चोरी गई दो बाइकें भी शामिल है। वहीं दो बाइकें कोतवाली नगर से आरोपियो ने चोरी कर ली थी। प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल ने बताया कि हथिगंवा थाना के पूरे बक्शी निवासी रामफल पटेल का पुत्र सुनील उर्फ शिवा पटेल फरार हो गया है। पुलिस टीम को उसकी गिरफ्तारी के लिए लगा दिया गया है। इधर पुलिस की इस सफलता पर एसपी सतपाल अंतिल ने प्रभारी निरीक्षक कमलेशपाल समेत टीम मे शामिल पुलिसकर्मियों को पुरस्कृत किये जाने का ऐलान किया है।

नवविवाहिता की संदिग्ध परिस्थिति में मौत, मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। एक साल पहले विवाहिता की शादी के बाद ससुरालीजनों द्वारा लगातार तिरिक्त दहेज की मांग पूरी ना होने पर विवाहिता की गुरुवार को संदिग्ध दशा में मौत हो गई, जिस पर विवाहिता के मायकेवालों ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर दहेज उत्पीड़न की तहरीर दिया। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद दहेज उत्पीड़न दहेज के लिए हत्या का मामला दर्ज कर लिया। कोहड़ौर थाना क्षेत्र के बिजरा रामापुर गांव के रहने वाले राजितराम ने अपनी बेटी रूपा की शादी पट्टी कोतवाली क्षेत्र के ढिढुई गांव के रहने वाले उदय प्रताप सिंह के बेटे आनंद कुमार से बीते 17 जून 2021को किया था। रूपा जब ससुराल आई तो अतिरिक्त दहेज के लिए ससुराल में उसका पति ससुर तथा सास प्रताड़ित करने लगे।

विकास के नाम पर आंसू बहा रहा परियावां बाजार

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। कौशाम्बी संसदीय क्षेत्र कहे जाने वाला परियावां बाजार सांसद की उपेक्षा का शिकार हो गया है जो विकास के नाम पर आंसू बहा रहा है जहाँ विकास के नाम पर कुछ भी नही दिखाई दे रहा है। भाजपा कौशाम्बी सांसद विनोद सोनकर व्यापारियों से किये गए एक भी वादे को अभी तक पूरा नही कर सके जिसके चलते व्यापारियों में सांसद के प्रति नाराजगी है। मालूम हो कि पिछले पंचवर्षीय चुनाव जीतने के बाद सांसद द्वारा ब्लाक कालाकांकर के अंतर्गत क्षेत्र में कोई भी ऐसा विकास कार्य नही कराया गया जिससे लोगो की नाराजगी दूर हो सके। पांच साल बीत जाने के बाद दूसरी पंचवर्षीय कार्यकाल में चुनाव जीतने के बाद परियावा बाजार में मातामैया धाम दर्शन करने आये सांसद बिनोद सोन कर से बाजार के व्यापारियों ने माता मैया धाम में एक सार्वजनिक धर्मशाला निर्माण के लिए मांग की थी जो हवा हवाई साबित हो रही है इसी तरह परियावा बाजार के ब्यापारियों ने कानपुर इंटरसिटी व लखनऊ इंटर सिटी एक्सप्रेस ट्रेन को परियावां रेलवे स्टेशन पर एक मिनट के लिए स्टापेज कराने की मांग की थी जो आज दिन तक पूरी नही हो सकी।

वार्षिक बैठक मे किसान कल्याणकारी योजनाओं पर हुई चर्चा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के रायपुर भगदरा साधन सहकारी समिति के निकाय की सामान्य व वार्षिक बैठक मे किसानों से जुडी कल्याणकारी योजनाओं पर विमर्श किया गया। वहीं बैठक के जरिये निकाय की वार्षिक गतिविधियों के एजेण्डो को भी संतुलन पत्र के जरिए स्वीकृत किया गया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए लाल साहब ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर सहकारी समिति की भूमिका पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ शाखा प्रबंधक आलोक कुशवाहा ने बैठक मे मौजूद किसानो को बताया कि जिला सहकारी बैंक के जरिए सबसे कम ब्याज तीन प्रतिशत पर केसीसी ऋण का वितरण किया जा रहा है। रानीगंज कैथौला से सम्बद्ध सहकारी समिति रायपुर भगदरा के जरिए उर्वरक बिक्री कर ऋण भी दिये जाने की व्यवस्था की गई है। उन्होंने यह भी बताया कि समिति पर सुविधा के लिए बिजली का बिल भी जमा किया जा सकता है। इस मौके पर शेर बहादुर सिंह, उमेश प्रताप सिंह, अजय प्रताप सिंह, राजाराम पटेल, रविशंकर शुक्ल, श्यामलाल मौर्य, अमृतलाल विश्वकर्मा, पवन सिंह, उमाशंकर मिश्र, सुरेंद्र कुमार, चंद्रपाल यादव, रामपदारथ आदि रहे।

खबर संक्षेप

सड़क हादसे में घायल चौकी इंचार्ज की इलाज के दौरान मौत

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली अंतर्गत पुलिस चौकी कोर्रई में तैनात चौकी इंचार्ज उपनिरीक्षक राजीव नारायण सिंह ड्यूटी के दौरान चौकी से मंझनपुर कोतवाली 12 नवम्बर को करीब 9:30 बजे रात्रि जा रहे थे। सी०जे० एम० आवास के सामने मंझनपुर में सड़क हादसे में वह गंभीर घायल हो गए थे, जिन्हें इलाज के लिए प्रयागराज के अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उप निरीक्षक की हालत गंभीर होते देख चिकित्सको ने उन्हें इलाज के लिए लखनऊ रेफर कर दिया था। इलाज के दौरान राजीव नारायण सिंह की मौत हो गई है।

महेवा घाट थाने का आईजी ने किया निरीक्षण

कौशाम्बी। पुलिस महा निरीक्षक प्रयागराज परिक्षेत्र प्रयागराज ने गुरुवार को थाना महेवाघाट का वार्षिक निरीक्षण किया गया इस दौरान गार्द की सलामी ली तथा थाना कार्यालय सीसीटीएनएस, मालखाना, हवालात, महिला हेल्प डेक्स व थाना परिसर का उन्होंने निरीक्षण किया सम्बंधित को दस्तावेजों के रख-रखाव व परिसर की साफ सफाई हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। साथ ही थाने के चौकीदारों के साथ गोष्ठी की गयी। उनका परिचय प्राप्त कर समस्याओं को सुना गया व उनके निस्तारण हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया।

जमानत मिलते ही हत्यारे ने फिर कर दी हत्या

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के रसूलाबाद उर्फ कोइलहा के मजरा गोलकइया पुर गांव में 8 वर्षों पूर्व होरीलाल की हत्या के आरोपियों ने बीती रात होरीलाल के पोते की हत्या कर मौत के घाट उतार दिया है बेखौफ अपराधियों ने मंगल की हत्या करने के बाद उसके पिता कमलेश पर प्राणघातक हमला किया है जिससे कमलेश को भी चोटें आई हैं हत्या की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर पुलिस अधीक्षक क्षेत्राधिकारी सहित थाना पुलिस पहुंची है और मृतक की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है खबर लिखे जाने तक हत्यारे गिरफ्तार नहीं हो सके हैं।

घटनाक्रम के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के रसूलाबाद ऊर्फ कोइलहा गांव के गोलकइयापुर गांव निवासी होरी लाल की चापड़ से काटकर हत्या कर दी गई थी घटना वर्ष 2013 की है इस घटना में होरी लाल के बेटा कमलेश कुमार ने नामजद मुकदमा दर्ज कराया था पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा था मुकदमे की सुनवाई के दौरान अदालत में आरोपियों को दोषी पाते हुए आजीवन कारावास की

युवक की हत्या के बाद घटनास्थल पर जुटे ग्रामीण

सड़क पर शव रखकर चक्काजाम करते ग्रामीण

सजा सुनाई थी आजीवन कारावास की सजा के मामले में जेल में बंद लोगों को 20 दिन पहले उच्च न्यायालय ने जमानत पर रिहा करने का आदेश दे दिया गया अदालत से जमानत पर रिहा होते ही हत्यारे बीती रात फिर कमलेश पुत्र होरी लाल के घर पहुंच गए इस मामले में उन्होंने कमलेश के रिश्तेदार की मदद ली रात रुकने के नाम पर पहुंचे हत्यारों ने आधी रात को कमलेश के बेटे मंगल पासी उम्र 18 वर्ष की बड़ी बेरहमी से हत्या कर दी है चीख-पुकार सुनकर घटनास्थल की ओर मंगल के पिता कमलेश और माता पहुँचे जिस पर हत्यारों ने मंगल के पिता कमलेश पर

बेटे की हत्या पिता पर प्राणघातक हमला कर हत्यारे हुए फरार, चरवा थाना क्षेत्र में बीती रात हत्या की घटना को अंजाम देने वाले हत्यारे 8 वर्ष पहले बाबा होरीलाल की कर चुके हैं हत्या

हमला कर दिया जिससे कमलेश को भी चोटें आई हैं मंगल की हत्या के बाद घटनास्थल पर चारों ओर खून बिखर गया है हत्या की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर परिजन और ग्रामीण पहुंच गए हैं मामले की सूचना पुलिस को दी गई है मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है योजनाबद्ध तरीके से की गई हत्या में थाना पुलिस हत्यारे को मानसिक विक्षिप्त बताने लगी है जिससे थाना पुलिस की मंशा पर सवाल उठने लगे हैं 15 दिन पहले अदालत से जमानत पर रिहा हुए लोग हत्या की फिराक में टहल रहे थे खबर लिखे जाने तक हत्यारों को पुलिस गिरफ्तार नहीं कर सकी है।

सड़क पर शव रखकर ग्रामीणों ने किया चक्का जाम

काजीपुर कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के रसूलाबाद उर्फ कोइलहा के मजरा में मंगल सिंह पुत्र कमलेश कुमार उर्फ पहाड़ी की हत्या के विरोध में आक्रोशित ग्रामीणों ने पोस्टमार्टम से लाश आने के बाद पूरामुफ्ती थाने के पास सड़क पर शव रखकर सड़क जाम कर दिया है सड़क पर शव रखकर जाम लगा दिया जाने से कई किलोमीटर दूर तक दोनो तरफ लंबा जाम लग गया है रोड पर बैठे आक्रोशित लोगों की मांग है कि जिला अधिकारी मौके पर आएं और हत्यारों की गिरफ्तारी करे सुरक्षा व्यवस्था को लेकर कई थानों की फोर्स मौके पर पहुंच गई है आक्रोशित लोगों को पुलिस समझा बुझा रही है लेकिन खबर लिखे जाने तक ग्रामीण मानने को तैयार नहीं है।

समुदायिक शौचालय की रकम हड़प गए घूसखोर अधिकारी

अधूरे शौचालय निर्माण कर पूरी रकम हिस्सा बांट कर डकार गए पंचायत विभाग के जिम्मेदार

कौशाम्बी। सिराथू तहसील के अन्तर्गत जमालमऊ ग्राम पंचायत में सार्वजनिक शौचालय निर्माण के लिए शासन से भेजी गई रकम पंचायत विभाग के जिम्मेदारों ने बैंक खाते से संपूर्ण निकाल ली है लेकिन वर्षों बीत जाने के बाद भी सार्वजनिक शौचालय का निर्माण पूर्ण नहीं हो सका है जिससे यह शौचालय उपयोग में नहीं आ सका है शौचालय की रकम हड़पने में ग्राम पंचायत से लेकर विकास भवन तक के अधिकारी हिस्सेदार बताए जाते हैं मामले में भ्रष्टाचार की कई बार ग्रामीणों ने डीएम सीडीओ से भी शिकायत की लेकिन शौचालय निर्माण में धांधली कर रकम हड़पने वाले जिम्मेदारों पर कार्यवाही नहीं हो सकी है। सरकारी खजाने से शौचालय निर्माण की रकम निकाले जाने के वर्षों बाद भी सार्वजनिक शौचालय नही बन पाया है फ्रंट की दीवाल पेंट कर ग्राम प्रधान अधिकारी को धोखा दे रहे है इतना ही नहीं इस ग्राम पंचायत में इस कदर धांधली है कि सरकार द्वारा नियुक्त कर्मचारी व प्रधान मिलकर सहायता राशि को हजम कर जाते हैं शौचालय चालू ना होने से स्वच्छता अभियान को ग्रामीण बट्टा लगा रहे है अधिकारियों की अनदेखी के चलते इस ग्राम पंचायत में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है सरकारी रकम भ्रष्टाचार में लिप्त ग्राम प्रधान आला अधिकारियों पर कमीशन खोरी का आरोप लगा रहे हैं।

न्यूज झरोखा

संविधान दिवस पर अधिकारियों कर्मचारियों को जिलाधिकारी ने दिलायी शपथ

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने संविधान दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कलेक्ट्रेट के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शपथ दिलायी। इसी प्रकार विकास भवन परिसर में मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में विकास भवन के अधिकारियों व कर्मचारियों को शपथ दिलायी गयी। इस अवसर पर सूचना विभाग द्वारा दीवानी परिसर व तहसील मंझनपुर में संसद भवन, दिल्ली एवं लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम का एल0ई0डी0 वैन के माध्यम से सजीव प्रसारण किया गया एवं उपस्थित अधिवक्तागण व आमजन ने महामहिम राष्ट्रपति, महामहिम उप राष्ट्रपति प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के उद्बोधन को सुना।

महामाया राजकीय महाविद्यालय में छात्र छात्राओं शिक्षकों ने लिया संविधान की शपथ

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय में संविधान दिवस के अवसर पर छात्र-छात्राओं के माध्यम से शपथ समारोह का आयोजन किया गया ' इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विनय कुमार सिंह ने किया अपने उदबोधन में डॉ विनय कुमार सिंह ने बताया कि हमारा संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है ,जो डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के अथक परिश्रम का प्रतिफल है। उन्होंने कहा कि विश्व के अनेक देशों के संविधान की व्यवहारिक विशेषताओं को भारतीय संविधान में सम्मिलित किया गया है ।इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर डॉ अजय कुमार, डॉ पवन कुमार डॉ अमित शुक्ला, डॉ नीरज कुमार डॉ संतोष कुमार,डॉ रमेश कुमार डॉ शैलेश मालवीय तथा कार्यालय के कर्मचारी अजय कुमार अनीता केशरवानी ,मानवेंद्र सिंह आदि लोग उपस्थित रहे।

ना डिग्री ना अनुभव लकवा कैंसर इलाज का बड़ा बड़ा दावा

अखंड भारत संदेश

स्वास्थ्य विभाग के रहमों करम पर पलने वाले कथित चिकित्सक ने मरीजों के इलाज का झांसा देकर अर्जित की करोड़ों की संपत्ति

दो बार खा चुका है जेल की हवा लेकिन मरीजों से लूट के मामले में चिकित्सक की आदत में नहीं हुआ सुधार

कौशाम्बी। बीते दो दशक से मरीजों को लूट कर अकूत संपत्ति अर्जित करने वाले मनौरी कस्बे के एक कथित चिकित्सक पर योगी सरकार के अधिकारी कमजोर पड़ गए है बेखौफ तरीके से कथित चिकित्सक इलाज के नाम पर मरीजों को लूट रहा है लकवा कैंसर रिसर्च सेंटर का बोर्ड लगा कर इलाज के नाम पर मरीजों को लूटकर उन्हें मौत देने के खेल में चिकित्सक लगा है इस कथित चिकित्सक के पास किसी प्रकार की डिग्री नहीं है अनुभव भी किसी प्रकार का नहीं है लेकिन चिकित्सक के अवैध तरीके से बड़े अस्पताल ट्रामा सेंटर और कैंसर लकवा रिसर्च सेंटर संचालित किए जाने के मामले में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी बौने साबित हो रहे हैं।

सूत्रों की माने तो स्वास्थ विभाग के अधिकारियों तक चिकित्सक द्वारा मोटी रकम पहुंचाई जा रही है। हालांकि मरीजों को लूटने वाले चिकित्सक पर दो बार पूरामुफ़्ती थाने में मुकदमा दर्ज हो चुका है चिकित्सक को पुलिस ने जेल भी भेज दिया था अस्पताल को स्वास्थ विभाग ने सीज कर दिया था अस्पताल का ताला टूट चुका है और मुकदमे की फाइल गायब हो चुकी है लेकिन फिर भी चिकित्सक के मरीजों से लूट के धंधे नहीं बंद हुए हैं। बताते चलें कि प्रतापगढ़ जनपद में भाई की डिग्री पर फर्जी तरीके से मनौरी कस्बे में ट्रामा सेंटर लकवा कैंसर रिसर्च सेंटर और बड़ा अस्पताल संचालक द्वारा मरीजों को प्रतिदिन लूटा जा रहा है मरीजों को लूटने के लिए चिकित्सक ने दलालों का जाल फैला दिया है 40% कमीशन लेकर दलाल यहां मरीजों को पहुंचा देते हैं और अपना कमीशन लेकर चले जाते हैं फिर मरीजों को लूटने का खेल का चिकित्सक का शुरू हो जाता है चिकित्सा को लाखों रुपए देने के बाद भी मरीज का मर्ज नहीं ठीक होता है और बिस्तर पर मरीज कराहते रहते हैं अक्सर देखा जाता है कि मनौरी की इस अस्पताल से इलाज कराने वाले मरीज भगवान को प्यारे हो जाते हैं लेकिन फिर भी चिकित्सक के कारनामे पर अंकुश नहीं लग पाता है डिग्री अनुभव में शून्य कथित चिकित्सक बड़े-बड़े दावा करने से बाज नहीं आता है कभी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री राष्ट्रपति का इलाज करने का वह चैलेंज करता है तो कभी देश के उद्योगपतियों पूंजी पतियों के मर्ज को ठीक करने का वह दावा कर आम जनता को गुमराह कर लूट लेता है आखिर कब तक मरीजों को लूटने का यह खेल स्वास्थ्य विभाग के घूसखोर अधिकारियों के दम पर कौशांबी की धरती में चलता रहेगा डीएम कमिश्नर सहित स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारी चिकित्सक के अवैध ट्रामा सेंटर नर्सिंग होम संचालक पर कब तक चुप बैठे रहेंगे कभी-कभी अधिकारियों के साथ फोटो खिंचवा कर यह चिकित्सक मरीजों के बीच अपने को महिमामंडित करने से भी नहीं बाज आता है बीते दिनों पौधारोपण के समय अधिकारियों के साथ पौधारोपण कर फोटो खिंचवा कर वाहवाही लूट रहा था चिकित्सक के कारनामे पर यदि योगी सरकार ने जांच कराई तो एक बार फिर चिकित्सक का जेल जाना तय है लेकिन क्या चिकित्सक के अवैध तरीके से इलाज करने और मरीजों से धनादोहन के मामले की निष्पक्ष जांच हो पाएगी योगी सरकार की व्यवस्था पर बड़ा सवाल है।

वाहन चलाते समय बरतें विशेष सावधानी : आईजी

डॉक्टर रिजवी कॉलेज में यातायात गोष्ठी और महिला सशक्तिकरण पर कार्यक्रम संपन्न

छात्र छात्राओं द्वारा यातायात व महिला सशक्तिकरण के सम्बन्ध में प्रस्तुत किए गए विभिन्न कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

यातायात कार्यक्रम में उपस्थित पुलिस महानिरीक्षक व अन्य

कौशाम्बी। डॉ रिजवी कॉलेज में यातायात गोष्ठी का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पुलिस महानिरीक्षक प्रयागराज भी शामिल हुए इस मौके पर पुलिस महानिरीक्षक ने कहा कि यातायात के नियमों का पालन कर दुर्घटना से बचा जा सकता है उन्होंने कहा कि दुर्घटना के बाद पूरा परिवार प्रभावित होता है इसलिए सड़कों पर वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतें और दुर्घटना से बचें। पुलिस महानिरीक्षक प्रयागराज परिक्षेत्र डॉ राकेश सिंह के जनपद आगमन पर डॉ रिजवी स्प्रिंग फिल्ड कॉलेज करारी में उनको गार्द सलामी दी गयी डॉ रिजवी कॉलेज में यातायात माह नवम्बर के तहत जागरूकता अभियान एवं मिशन शक्ति के तहत महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे पुलिस महानिरीक्षक जिलाधिकारी पुलिस अधीक्षक मुख्य चिकित्साधिकारी क्षेत्राधिकारी मंझनपुर यातायात व प्रभारी यातायात व यातायात टीम मौजूद रही कार्यक्रम में जिलाधिकारी सुजीत कुमार पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा मुख्य चिकित्सा धिकारी आदि अधिकारियों ने यातायात गोष्ठी पर बोलते हुए कहा कि दुर्घटना से बचाव प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है सावधानी पूर्वक वाहन चलाएं यातायात नियमों का पालन करें अपने को भी बचाएं और सड़क पर चलने वाले अन्य लोगों के भी जीवन की रक्षा करें। विद्यालय के छात्र छात्राओं द्वारा यातायात व महिला सशक्तिकरण के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये तत्पश्चात जनपद के महिला पुलिस कर्मियों द्वारा मिशन शक्ति के तहत महिला सशक्तिकरण के सम्बन्ध में तथा यातायात पुलिस कर्मियों व साइबर सेल द्वारा किये गये सराहनीय कार्यों के लिये प्रशस्ति पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया गया साथ ही एम्बुलेंस चालक व छात्र छात्राओं को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया पुलिस महा निरीक्षक अन्य अधिकारियों द्वारा यातायात नियमों का पालन करने हेतु प्रेरित किया गया। गोष्ठी के बाद पुलिस महानिरीक्षक द्वारा यातायात जगरूकता रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया मंच का संचालन सुनील कुमार सहायक आचार्य डा. रिजवी कालेज आफ ला द्वारा किया गया बी.ए.एलएल.बी. की छात्रा उपासना उपाध्याय एवं तान्या भारती द्वारा मिशन शक्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत महिला जागरूकता एवं सशक्तिकरण पर अपने विचार प्रस्तुत किया गया कार्यक्रम में सभी शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राओं द्वारा सक्रिय सहभागिता कर कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान प्रस्तुत किया।

सरकार ने जन कल्याणकारी योजनाएं चलाकर गरीबों के हित में किया काम : राज्यमंत्री

अखंड भारत संदेश

राज्य मंत्री सुरेश पासी ने चायल में जगह जगह पर किया जनसंवाद राज्य मंत्री ने कहा कि 16 से 18 घंटे बिजली सबसे ज्यादा हमारी सरकार ने दिया

राज्य मंत्री ने कहा कि आप लोगों का सौभाग्य है की आप के विधायक संजय कुमार गुप्ता आपकी विधानसभा चायल में 5 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं से विकास कार्य किए हैं

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री सुरेश पासी ने चायल विधानसभा के अंतर्गत मूरतगंज ब्लॉक के अंतर्गत बडगांव में जनसंवाद किया जनसंवाद के दौरान मुख्य अतिथि राज्य मंत्री सुरेश पासी ने कहा कि आज मोदी योगी की सरकार उत्तर प्रदेश में गरीबों क लिए जन कल्याणकारी योजनाएं चलाकर गरीबों की हित में काम किया है।

उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अब हम सबके बीच वोट की राजनीती करने वाले बहुरूपिया आपका हितेषी अपने को बताएंगे उन्होंने कहा कि यह वही बहरूपिया है जो कोरोना काल में दिखाई नहीं पड़े आपका दुख सुख पूछने नहीं आए और आज वोट की राजनीति करने आपके बीच भेष बदल कर आएंगे राज्य मंत्री सुरेश पासी ने केंद्र सरकार व राज्य सरकार की चल रही कल्याणकारी योजनाओं को गिनाया विकास कार्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहां कि आप लोगों का सौभाग्य है की आप के विधायक संजय कुमार गुप्ता आपकी विधानसभा चायल में 5 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं से विकास कार्य किए हैं उन्होंने कहा कि ऐसा कभी किसी विधायक ने नहीं किया यह आप सब का सौभाग्य है कि आपको ऐसे कर्मठ व ईमानदार व जुझारू विधायक मिले हैं जो गरीब किसान मजदूर के लिए सदैव विधानसभा में आवाज उठाते रहते हैं उपस्थित जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट से विधायक चायल का स्वागत करते हुए दोनों हाथ उठाकर गगनचुंबी नारों के बीच अपने लाडल विधायक संजय को पुनः विधायक बनाने का संकल्प लिया उपस्थित भीड़ ने संजय गुप्ता

कार्यक्रम में बोलते राज्य मंत्री सुरेश पासी साथ में बैठे विधायक चायल संजय गुप्ता व अन्य

जिंदाबाद के नारे लगाए। इस मौके पर उपस्थित भीड़ को संबोधित करते हुए विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने कहा कि मैं आप सबका सदैव ऋणी रहूंगा जो प्यार दुलार आप सब ने दिया है मेरी तरफ कोशिश रही है कि आपके क्षेत्र का विकास कर आप सभी की मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध करा सकूं चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता ने कहा कि सड़को का जाल बिछाते हुए हमने शिक्षा चिकित्सा और बिजली पर काम किया है हमने आप सभी की मान सम्मान की रक्षा करने का सदैव प्रयास किया व हमेशा करता रहूंगा उन्होंने कहा कि अगर 12:00 बजे रात को मेरे पास फोन आया है तो मैंने कभी भी आपका सर झुकने नहीं दिया आपका बेटा बनकर सदैव काम किया हूं आज पुनः आप सब से आशीर्वाद की कामना करता हूं कार्यक्रम में मुख्य रूप से रामनरेश पासी जिला पंचायत सदस्य ,अनुसूचित मोर्चा जिला अध्यक्ष ज्ञान सरोज, ओमप्रकाश पासी, मंडल अध्यक्ष काजू राममिलन चौधरी, वीरेंद्र फौजी, ब्रह्मानंद पासी, प्रबुद्ध प्रकोष्ठ जिला संयोजक करुणेश त्रिपाठी, जिला अध्यक्ष पिछड़ा मोर्चा पुष्पराज सिंह पटेल, रामचंद्र पासी, जिला महामंत्री पिछड़ा मोर्चा सूरज यादव सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

एक डोज 2022 में और दूसरा डोज 2024 में

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री सुरेश पासी ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि एक दोस्त 2022 में और दूसरा डोज 2024 में कमल का फूल वाला बटन दबाकर लगा देना कोरोनावायरस रूपी सपा बसपा कांग्रेस सब खत्म हो जाएगा उन्होंने कहा कि मोदी जी का सपना है कि हर घर पक्का हो जाए हर घर में शौचालय हो जाए योगी सरकार ने सारे गुंडे माफियाओं को जड़ से खत्म कर दिया है भय मुक्त सरकार भाजपा सरकार ने देकर अमन-चैन का वातावरण कायम किया है।

प्रभारी मंत्री के निर्देश के बाद भी नहीं सुधरी जिले की सरकारी अस्पतालों की व्यवस्था

अखंड भारत संदेश

अस्पताल के बाहर पूरे दिन मरीज करते रहे इंतजार नहीं पहुंचे चिकित्सक

सरकारी अस्पताल चरवा में डॉक्टर का इंतजार करते मरीज

कौशांबी। जिले में सरकारी अस्पतालों की व्यवस्था में सुधार होता नहीं दिख रहा है बुधवार को कलेक्ट्रेट की मीटिंग में प्रभारी मंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय ने स्पष्ट शब्दों में जिला अधिकारी और मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया कि जो चिकित्सक सरकारी अस्पताल में समय से ड्यूटी नहीं दे रहे हैं उन्हें बर्खास्त कर दिया जाए प्रभारी मंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय के निर्देश के दूसरे दिन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चरवा की हकीकत देखने का प्रयास किया गया तो दोपहर 1:30 बजे के बाद तक सरकारी अस्पताल में एक भी चिकित्सक नहीं पहुंचे थे अस्पताल के बाहर मरीज चिकित्सक के आने का इंतजार कर रहे थे इस सरकारी अस्पताल के चिकित्सक की अनुपस्थिति का यह पहला दिन नहीं है यहां प्रत्येक दिन चिकित्सक गायब रहते हैं इसके अलावा भी दर्जनों सरकारी अस्पतालों में पूरे दिन चिकित्सक नहीं पहुंचे हैं। सरकारी अस्पतालों से चिकित्सकों के गायब रहने के बाबत जब मुख्य चिकित्सा अधिकारी से बात की गई तो उनका कहना है कि अस्पताल में चिकित्सक पहुंचते हैं कभी किसी कारण से चिकित्सक नहीं पहुंचे होंगे तो उन्हें बर्खास्त नहीं किया जा सकता है मुख्य चिकित्सा अधिकारी गायब चिकित्सकों की तरफदारी करते देखे गए हैं सूत्रों की मानें तो सरकारी अस्पतालों से वेतन लेने के बाद गायब रहने वाले चिकित्सकों से स्वास्थ्य विभाग का एक चर्चित लिपिक द्वारा प्रत्येक महीने मोटी रकम वसूली जा रही है ड्यूटी से गायब रहने वाले चिकित्सकों से वसूली का यह खेल पुराना है और जो नया मुख्य चिकित्सा अधिकारी आता है वसूली में लिप्त बाबू चिकित्सकों के कारनामों के बारे में नए मुख्य चिकित्सा अधिकारी को हकीकत बात बता कर वसूली की बात समझा देते हैं जिसके बाद मुख्य चिकित्सा अधिकारी ठंडे पड़ जाते हैं आखिर प्रभारी मंत्री के निर्देश के बाद भी मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने चौपट स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार करने के उद्देश्य से अस्पताल के गायब रहने वाले चिकित्सकों पर कठोर कार्यवाही क्यों नहीं किया है आखिर योगी सरकार और उनके मंत्रियों का आदेश कौशांबी में कब लागू होगा यह स्वास्थ्य व्यवस्थाओं पर बड़ा सवाल उत्पन्न हो रहा है।

खेलकूद प्रतियोगिता में स्वर्ण मिडिल रजत देकर राज्यमंत्री ने किया खिलाड़ियों को सम्मानित

खेल कार्यक्रम में पहुंचे राज्य मंत्री सुरेश पासी का स्वागत करते शिक्षक

भरवारी कौशाम्बी। खेलकूद प्रतियोगिता के अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री सुरेश पासी पहुंचे हैं और खिलाड़ियों को स्वर्ण मिडिल रजत मेडल और सिल्वर मेडल प्रदान कर उन्होंने खिलाड़ियों को सम्मानित किया है इस मौके पर राज्य मंत्री सुरेश पासी और चायल विधायक संजय गुप्ता ने भाजपा सरकार की उपलब्धियों का बखान किया है उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की योगी सरकार और केंद्र की मोदी सरकार खिलाड़ियों के लिए तमाम योजनाएं संचालित कर रही है। विकासखंड मूरतगंज के रामलीला मैदान में उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री सुरेश पासी ने केंद्र और प्रदेश सरकार का गुणगान करते हुए कहा कि खेल में प्रतिभावान खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के लिए योगी और मोदी सरकार ने तमाम योजनाएं बनाई हैं उन्होंने कहा कि बच्चे ही देश के भविष्य हैं और बच्चे जब आगे बढ़ेंगे तो देश आगे बढ़ेगा इस मौके पर चायल विधायक संजय गुप्ता खंड शिक्षा अधिकारी डॉक्टर किरण पांडेय प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष अशोक द्विवेदी आदि ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए खेल के प्रति छात्रों को प्रोत्साहित किया। ब्लॉक स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता वर्ष 2021-22 का आयोजन मूरतगंज के रामलीला मैदान में आयोजित किया गया जिसमें प्रतिभागियों को स्वर्ण मिडिल रजत मेडल सिल्वर मेडल प्रदान किया गया एवं विकलांग बालकों को भी प्रतियोगिता में प्रतिभाग कराया गया। इस मौके पर विधायक संजय गुप्ता के द्वारा सुंदर कविता प्रस्तुत करने के लिए ऋचा शर्मा सहायक अध्यापक प्राथमिक विद्यालय ग्रामीण भरवारी को स्टॉल और स्मृति चिन्ह प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया गया इस मौके पर प्राथमिक शिक्षक संघ के कोषाध्यक्ष रविंद्र मिश्रा उच्च प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष रत्नेश यादव मंत्री रविंद्र सिंह एवं संगठन के संरक्षक महफूज अहमद प्रेमचंद एस आर जी जी ओम प्रकाश सिंह फिरदौस फातिमा ज्योत्स्ना सिंह अनुराधा वर्मा मनोज वर्मा सुनील सिंह राजकुमार चौरसिया जीशान अहमद गिरधर दुबे सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

सम्पादकीय

क्या घटेगी आबादी

यह पहली बार हुआ है कि देश की राष्ट्रीय प्रजनन दर रिप्लेसमेंट मार्क से भी नीचे चली गई। ध्यान रहे, ऐसा संयोगवश या किसी नाटकीय घटनाक्रम के तहत नहीं हुआ है। औसत प्रजनन दर में कमी की प्रवृत्ति काफी समय से दिख रही थी। नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (एनएफएचएस-5) की ताजा रिपोर्ट ने यह महत्वपूर्ण तथ्य उजागर किया है कि भारत में टोटल फर्टिलिटी रेट यानी राष्ट्रीय प्रजनन दर 2.2 से कम होकर 2.0 तक पहुंच गई है। प्रति महिला औसत प्रजनन दर 2.1 को रिप्लेसमेंट मार्क के रूप में जाना जाता है। यानी इस औसत पर जनसंख्या कमोबेश स्थिर रहती है। यह पहली बार हुआ है कि देश की राष्ट्रीय प्रजनन दर रिप्लेसमेंट मार्क से भी नीचे चली गई। ध्यान रहे, ऐसा संयोगवश या किसी नाटकीय घटनाक्रम के तहत नहीं हुआ है। औसत प्रजनन दर में कमी की प्रवृत्ति काफी समय से दिख रही थी। ऐसे में यह मानना गलत नहीं होगा कि क्रमिक रूप से आया यह बदलाव काफी हद तक टिकाऊ है। निकट भविष्य में इसके अचानक फिर ऊपर का रुख ले लेने जैसे कोई आसार नहीं हैं। इसका मतलब यह हुआ कि देश की जनसंख्या को लेकर अपने नजरिये में भी हमें बदलाव लाने की जरूरत है। आजादी के बाद से ही जनसंख्या बढ़ोतरी को एक समस्या के रूप में देखने के हम आदी रहे हैं। आपातकाल के दौरान तो जबरन नसबंदी जैसे कार्यक्रम भी सरकार की ओर से चलाए गए। तत्कालीन सरकार की उस वजह से हुई बदनामी के चलते बाद की सरकारों ने वैसा कोई सख्त कार्यक्रम दोबारा नहीं शुरू किया, लेकिन अलग-अलग स्तर पर जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने की कोशिशें चलती रहीं। मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जरूर ह्यजनसंख्या विस्फोटह्व की जगह डेमोग्राफिक डिविडेंड का विमर्श चलाकर यह समझाने का प्रयास किया कि जनसंख्या हमारी समस्या नहीं है। इसका उपयुक्त इस्तेमाल हो तो यह हमारे लिए सबसे बड़ा वरदान साबित हो सकती है। मगर इस विमर्श का जमीन पर कोई खास असर नहीं देखा जा सका है।

कुछ हिंदुत्ववादी संगठन आज भी जनसंख्या वृद्धि को देश की एक बड़ी समस्या के रूप में देखते हैं और इसके लिए उन समुदायों को दोषी ठहराते हैं जिनमें जन्मदर अपेक्षाकृत ज्यादा है। इतना ही नहीं, बीजेपी शासित कुछ राज्यों ने हाल में भी जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने के लिए कड़े कानून लाने की बात कही है। यूपी, असम, कर्नाटक, गुजरात आदि राज्यों में खुद मुख्यमंत्री या कैबिनेट सदस्य ऐसा कानून लाने का इरादा जता चुके हैं। बीजेपी सांसद राकेश सिन्हा और अनिल अग्रवाल संसद में भी ऐसे एक निजी विधेयक का नोटिस दे चुके हैं। यह समझा जाना जरूरी है कि जनसंख्या को लेकर ऐसा विमर्श अब न केवल पुराना पड़ चुका है बल्कि बदले हालात में इससे प्रेरित कदम हानिकारक साबित होंगे। ताजा प्रवृत्ति जारी रही तो कुछ ही समय में हमारी आबादी घटने लगेगी और चुनौतियों का स्वरूप बिल्कुल बदल जाएगा। इसलिए जरूरी है कि लकीर का फकीर बन पुराना राग अलापते रहने के बजाय हम खुद को आने वाली नई चुनौतियों के लिए तैयार करें।

फिर उगाई जा रही नफरत की फसल

जगदीश रत्तनानी

शिवसेना के उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में गठबंधन सरकार काम कर रही है। राजनीतिक ताकतें भले ही उनके खिलाफ हैं पर परिणामों के लिए वे ही जिम्मेदार हैं। सरकार का कर्तव्य और जिम्मेदारी है कि वह इन दंगों को हल्के में न ले और आग फैलने से पहले एक सुनिश्चित सोच के साथ गड़बड़ी खत्म करने के लिए कदम उठाये। यह सरकार की सफलता है कि उसने न केवल हिंसा पर काबू पाया बल्कि हिंसा को बढ़ावा देने के आरोपित तथा घटनास्थल पर उपस्थित महानगरपालिका के वर्तमान नगरसेवकों सहित पार्टी के अनेक पदाधिकारियों तथा एक पूर्व मंत्री को गिरफ्तार भी किया। सांप्रदायिक हिंसा के चलते आजाद भारत में कई सरकारों को नीचा देखना पड़ा है। दंगों की शुरूआत तो बहुत छोटी होती है पर कुछ ही समय में ये भीषण रूप धारण कर लेते हैं। आम तौर पर जो नागरिक कानून और व्यवस्था की सीमाओं में रहता है, अचानक सभी सीमाओं को पार कर जाता है। भीड़ को पुलिस पर हमला करते, वाहनों को जलाते और जरा सी अफवाह पर सड़कों पर उतरते देखना असामान्य नहीं है। किसी न किसी बहाने या कारण, वास्तविक या काल्पनिक अफवाहों की वजह से हिंसा शुरू होती है और यदि राज्य सरकार इस हिंसा को दबाने के लिए तत्काल, स्पष्ट एवं हिंसा में लिप्त किसी भी पक्ष के खिलाफ पूर्ण रूप से सक्रिय नहीं होती तो हिंसा जीतती है और प्रशासन हार जाता है। कई दंगों का यही इतिहास रहा है और इसका प्रशासनिक सबक सरल है-इस तरह की आग के साथ मत खेलो! यह 21वीं सदी के भारत की एक दुखद तस्वीर है कि त्रिपुरा और महाराष्ट्र में साम्प्रदायिक आग भड़की है। एक जगह भड़की हिंसा दूसरे जगह की हिंसा को बढ़ा रही है। इस हिंसा को ज्यादातर कुछ अर्धसत्यों और ढेर सारी नफरत का आधार लेकर फैलाया गया है जो हमारी राजनीतिक प्रणाली में फैल गया है। त्रिपुरा में जो कुछ हुआ वह चौंकाने वाला है। इस भाजपा शासित राज्य में हिंसा को नियंत्रित करने की सरकार की विफलता को उजागर कर रहे 100 से अधिक पत्रकारों और वकीलों को गैरकानूनी गतिविधियों (रोकथाम) अधिनियम के कड़े प्रावधानों के तहत गिरफ्तार कर सरकार ने अपने कुशासन का परिचय दिया है। इस विषय पर एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया की टिप्पणी बहुत सही है। महाराष्ट्र में स्थिति अलग है। त्रिपुरा में कथित हिंसा की घटनाओं के खिलाफ प्रदर्शन के बाद अमरावती और राज्य के कुछ अन्य जिलों में साम्प्रदायिक उपद्रव शुरू हुए। इसके बाद हुई हिंसा राज्य सरकार के लिए एक नई चुनौती बन गई है। तेजी से बढ़ रही अक्खड़ भाजपा को नियंत्रित करने के लिए गैर-भाजपाई ताकतों के अनूठे गठजोड़ के प्रयोग के रूप में यहां ठाकरे सरकार चल रही है। सप्ताहांत में आई रिपोर्ट के मुताबिक तनाव, विरोध और हिंसा का जारी रहना कोई अच्छा संकेत नहीं है। सांप्रदायिक ताकतों द्वारा हिंसा भड़काने और माहौल खराब करने की कोशिश कर भाजपा ऐसा दिखाने का प्रयत्न कर रही है कि गठबंधन सरकार राज्य में शासन करने में असमर्थ है।

राज्य में आज शिवसेना के उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में गठबंधन सरकार काम कर रही है। राजनीतिक ताकतें भले ही उनके खिलाफ हैं पर परिणामों के लिए वे ही जिम्मेदार हैं। सरकार का कर्तव्य और जिम्मेदारी है कि वह इन दंगों को हल्के में न ले और आग फैलने से पहले एक सुनिश्चित सोच के साथ गड़बड़ी खत्म करने के लिए कदम उठाये। यह सरकार की सफलता है कि उसने न केवल हिंसा पर काबू पाया बल्कि हिंसा को बढ़ावा देने के आरोपित तथा घटनास्थल पर उपस्थित महानगरपालिका के वर्तमान नगरसेवकों सहित पार्टी के अनेक पदाधिकारियों तथा एक पूर्व मंत्री को गिरफ्तार भी किया।

इस मामले में आगे और कार्रवाई करते हुए मामले की गहरी जांच की जाए और दोषियों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किए जाएं ताकि नफरत फैलाने वालों तक यह स्पष्ट संदेश पहुंचे कि दंगाइयों को बख्शा नहीं जाएगा। दंगाग्रस्त इलाकों में पहले चार दिन का कर्फ्यू लगाया गया तथा इंटरनेट सेवाओं को प्रतिबंधित कर दिया गया था जो इन परिस्थितियों में सही कदम है। राज्य सरकार को महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री ए आर अंतुले से कुछ सबक लेने चाहिए ताकि वह अच्छे से काम कर सकें। अंतुले कथित घोटालों के लिए बहुत बदनाम हैं, लेकिन होशियार बैरिस्टर यह जानता था कि प्रशासन से किस तरह काम लेना है। वे एक बार अपने मुख्य सचिव के साथ बैठक में थे तभी भिवंडी में हिंसा होने की कुछ खबरें आईं। उन्होंने मुख्य सचिव से कहा कि वे बैठक से सीधे घटनास्थल पर जाएं, उन्हें मुख्यमंत्री की सभी शक्तियां प्रदान की गईं और आदेश दिया गया कि जब तक हिंसा बंद नहीं होती, वे वापस न आएं। उनके वहां पहुंचने के बाद स्थिति सामान्य हो गई। उस दिन के बाद हिंसा की कोई वारदात नहीं हुई। महाराष्ट्र अभी चुनौतीपूर्ण समय से गुजर रहा है। राज्य के एक पूर्व गृह मंत्री सलाखों के पीछे हैं। मुंबई का एक पूर्व पुलिस कमिश्नर फरार है। यह सब उस समय हुआ है जब राज्य में उद्धव ठाकरे की शिवसेना, शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गठबंधन सरकार है जिसने भाजपा के सामने कड़ी राजनीतिक चुनौती पेश की है। भाजपा ने यह सोच लिया था कि वह सत्ता में वापसी करेगी और शिवसेना के साथ मिलकर देवेन्द्र फडणवीस को मुख्यमंत्री के रूप में फिर से बैठाएगी, परन्तु घटनाक्रम नाटकीय रूप से बदल गया। शिवसेना ने सत्ता में अपने उचित हिस्से की मांग की और अंततः सत्ता पाने के लिए नए भागीदारों की मदद से भाजपा का साथ छोड़कर सत्ता छीन ली। भाजपा इस बात को पचा नहीं पा रही है। भाजपा और उसके समर्थक इस सरकार से घृणा करते हैं और वे राज्य सरकार को गिराने के लिए कोई भी मौका छोड़ना नहीं चाहते हैं।

तीन दशक लंबी शिवसेना-भाजपा की साझेदारी टूटने के साथ ही शिवसेना भाजपा के कट्टर आलोचकों में से एक के रूप में सामने आई है। यह एक महत्वपूर्ण राजनीतिक बदलाव है। हिंदुत्व की राजनीति के नाम पर अपना अस्तित्व रखने वाले दो दल अब असहमत हैं और दोस्त से दुश्मन बनकर एक-दूसरे को बेनकाब करने के लिए हर तरह के प्रयास कर रहे हैं जो अपने आप में बेहद दिलचस्प है। एक बार केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सदन में सत्ता पक्ष में बैठे थे तब विपक्ष में बैठे शिवसेना सांसद संजय राउत ने राज्यसभा में कहा था- हमें किसी से देशभक्ति के प्रमाण पत्र की जरूरत नहीं है। जिस स्कूल (हिंदुत्व) में आप पढ़ते हैं, हम (शिवसेना) वहां के प्रधानाध्यापक रहे हैं। महाराष्ट्र की सांप्रदायिक घटनाओं को इस तनाव के आलोक में देखना होगा। महाराष्ट्र में भाजपा की पराजय के बाद से राज्य और देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में बार-बार सांप्रदायिक विभाजन करने की कोशिश की गई है। जब पालघर नामक स्थान पर दो साधुओं और उनके ड्राइवर की हत्या कर दी गई थी तब कुछ वर्गों की सांप्रदायिक टिप्पणी पर विचार करना जरूरी है। जो कुछ हुआ था वह भगवा वस्त्र पहने यात्रियों के प्रति भीड़ की प्रतिक्रिया का मामला था। इन व्यक्तियों के बारे में भीड़ का विचार था कि ये लोग बच्चे चुराने वाले हैं। इस मामले में 270 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया और अंततः सात आरोप पत्र दाखिल किए गए। सबसे सामंजस्यपूर्ण स्थानों में से एक हिन्दी फिल्म उद्योग में पैदा किए जा रहे विभाजन पर विचार करें! यहां सांप्रदायिक विभाजन का कोई स्थान नहीं है लेकिन ऐसा विभाजन बनाने के प्रयास किए गए हैं। आर्यन खान का मामला बॉलीवुड को खलनायक बताने का खेल है। यह काम ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठने जैसा है। इसमें और अधिक ईंधन डाला जा रहा है। हम नहीं जानते कि कब विस्फोट हो सकता है लेकिन इस विस्फोट के साथ ही एक मजबूत, जीवंत, मिश्रित भारत का सपना भी टूट जायेगा जो भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने और वैश्विक मंच पर अपनी छाप छोड़ने के लिए देखा गया है।

मैं कतरा हो के भी तूफां से जंग लेता हूं

डॉ लोक सेतिया

विषय बदल गया है साल तक जिन कृषि कानूनों के फायदे समझा रहे थे अचानक हिसाब लगा रहे हैं उनको हटाने से कितना मुनाफा होगा। राजनीति की शतरंज की बिसात पर मोहरे कब चाल बदलते हैं खेलने वाले खिलाड़ी जानते हैं किस समय कैसे शह - मात की बाजी खेलनी है। बात पुरानी है किसी राजनेता ने किसी शायर का शेर पढ़ा था मेरा पानी उतरते देख कर किनारे पर घर मत बना लेना, मैं समंदर हूं लौट कर जरूर आऊंगा। समंदर होने का गरूर चूर चूर भी होते देखा है जब हर कतरा अपनी हैसियत समझाने लगे खुद को विशाल समझने या ऊंचाई का शिखर समझने वाले इतिहास में पहले भी वक्त की ठोकर से सही अंजाम तक पहुंचते देखे हैं। सत्ता मिलने से बंदा खुदा नहीं बन जाता है राजनीति की डगर फिसलन भरी होती है पांव डगमगाते क्षण भी नहीं लगता है। सरकार हमेशा दावा करती है जनता की भलाई करने का जबकि उसको खजाना भरने से मतलब होता है घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या। जहर देने की जरूरत नहीं होती चारागर अगर दवा ही नहीं दे तो मन की बात सच हो जाती है और कत्ल का इल्जाम भी नहीं लग सकता। मुझे वसीम बरेलवी जी की गजल का शेर याद आता है। मैं कतरा हो के भी तूफां से जंग लेता हूं। ये है तो सब के लिए हो जिद हमारी है, इस एक बात पे दुनिया से जंग जारी है। ये इक चिराग कई आंधियों पे भारी है।

गलत को गलत समझना पड़ता है तभी उसको ठीक करने की बात होती है। मुश्किल होगी जब सरकार जनाब की हर बात पर ताली बजाने वालों को अखबार टीवी चैनल पर बात को बदल कर बताना पड़ेगा तीन कृषि कानून को निरस्त करने से फायदा होगा। कतरे की जिद के सामने झुकना समंदर की तौहीन होगी लेकिन बगैर कतरे समंदर की कोई औकात ही नहीं सीधी सी बात समझ नहीं आती कई बार। चुनावी नतीजे जब निकलेंगे तब निकलेंगे खुद को चाणक्य बताने वाले सर्वेक्षण का धंधा चलाने वाले नहीं जानते नैया बीच भंवर हिचकोले खाएगी डूबेगी कि पार होगी। किनारे पर भी कश्तियां डूबती रहती हैं अब अगर ये पांसा भी उल्टा पड़ा तो वही होगा न खुदा ही मिला न विसाले सनम, न उधर के रहे न इधर के रहे। मुहब्बत की बात होती तो हार कर भी जीत जाते हैं लेकिन सत्ता की राजनीति में आंकड़ों की बाजी पलटना भला कैसे मंजूर होगा। धड़कन बढ़ती जाएगी बड़ी कयामत की घड़ी सांस से सांस मिली तो सबको सांस आएगी। अभी किसी को समझ नहीं आएगा कि सरकार पहले सही थी या अब सही है लेकिन कहावत है शासक ताकतवर कभी गलत नहीं ठहराए जाते हैं। कुछ बातें राज भी होती हैं और हर कोई जानता भी होता है जैसे हमारे देश में पुलिस का रिश्ता अपराधियों से आंख मिचोली खेलने जैसा होता है। आम लोग अपराध होने पर पुलिस के पास जाते हैं शिकायत करने जबकि अपराधी पहले से भाईचारा बनाने और निभाने की व्यवस्था कर लेते हैं। पुलिस विभाग का चौबीस घंटे उपलब्ध नंबर मिलाने पर मिल भी जाये तो सूचना देने वाले से पूछताछ करने लगते हैं ताकि गुनाह करने वाला बच कर निकल सके। पुलिस वाले विश्वास करते हैं कि अपराध होते हैं तभी उनकी नौकरी वेतन के साथ कितना कुछ मिलता है अतः अपराध खत्म होना उनके हित की बात नहीं होगी। जुर्म होने पर धरे जाने के बाद पुलिस जांच के नाम पर पीड़ित पक्ष को ही परेशान करती है मुजरिम खुला आजाद फिरता है। देश की सबसे बड़ी अदालत कहती है उसको लगता है अमुक मामले में पुलिस की जांच इक मिसाल है खराब जांच की। इक कहानी है जिस में रात को सुनसान जगह पर डाकू रास्ते में कुछ लोगों को घेर लेते हैं मगर मुसाफिर बताते हैं कि हम कवि शायर लोग हैं किसी शहर से कवि सम्मलेन में भाग लेकर लौट रहे हैं। हमको कोई पैसा दौलत नहीं मिलते हैं सिर्फ तालियां और वाह वाह सुनकर खुश हो जाते हैं। हां कोई कोई बड़ा मशहूर हो जाता है तब उसको ईनाम धन दौलत हासिल होती है। डाकू सरदार उनसे नामी शायरों के नाम पते लिखवा लेते हैं और कुछ दिन बाद अपनी बिरादरी का विशेष उत्सव मनाने को कवि सम्मलेन आयोजित करते हैं। कविताएं सुनते हुए शानदार उपहार धन दौलत देकर खुश कर उनको विदा करते हैं लेकिन कुछ दूर पहुंचने पर उनको घेर कर लूटने लगते है सब। कवि शायर कहते हैं छीनना ही था तो पहले दिया ही क्यों तब डाकू सरदार कहते हैं वो हमारा शौक था मौज में दिया लेकिन ये हमारा धंधा है इसलिए अपना काम नहीं छोड़ सकते। बंदूक जिनके हाथ होती है उनका हर निर्णय सही होता है प्यार जतलाना भी और जुल्म ढाना भी शासक का मिजाज कब बदले कौन जानता है।

दो भारत की हकीकत

सर्वमित्रा सुरजन

संसद में अभी इन कृषि कानूनों को रद्द किए जाने की संवैधानिक प्रक्रिया बाकी है। अब किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर भी सरकार की गारंटी का इंतजार है। किसानों को अपनी आय दोगुनी होने का भी इंतजार है, लेकिन शासकों वाला भारत उस इंतजार की मियाद बढ़ाता जा रहा है। और ऐसे फैसले ले रहा है, जिससे गरीबों के बीच उसके शासन का प्रभामंडल बढ़े। जैसे केबिनेट की बैठक में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना की मियाद मार्च 2022 तक बढ़ाने का फैसला भी हुआ है। इंकलाबी कवि अवतार सिंह संधू पाश की इस कविता में असल भारत का दर्शन समाहित है। आसान शब्दों में लिखी इस कविता के अर्थ बहुत गहरे हैं और इन्हें समझने से पहले यह तय कर लेना होगा कि हम खुद को किस भारत का बाशिंदा मानते हैं। दरअसल पिछले दिनों कॉमेडी कलाकार वीर दास का एक वीडियो वायरल हुआ और उस पर खूब बवाल मचा। अमेरिका में एक कार्यक्रम के दौरान वीर दास ने दो भारत का जिक्र करते हुए देश की कुछ अंदरूनी खामियों पर तंज किया था। वीर दास ने वायरल वीडियो में कहा है कि मैं उस भारत से आता हूं, जहां दिन में महिलाओं की पूजा होती लेकिन रात में उनके साथ गैंगरेप जैसी घटनाएं होती हैं। इन बातों को लेकर वीर दास पर देश विरोधी होने का आरोप लगा, उनके खिलाफ मामले दर्ज हुए। इस विवाद के बाद वीर दास ने माफी मांगते हुए स्पष्ट कर दिया था कि वे अपने देश से बहुत प्यार करते हैं। अब उन्होंने कहा है कि उनका काम व्यंग्य करना है, और जब तक वो ऐसा करने में सक्षम हैं, वो कॉमेडी करते रहेंगे। अपने देश को लव लेटर लिखना जारी रखेंगे। वीर दास ने दो भारत का जो खुलासा हंसी-मजाक में कर दिया है, उसकी हकीकत से हर कोई वाकिफ है। यह कोई पहली बार नहीं है जब देश के भीतर दो तरह के देश होने की बात कही गई हो। भारत में वर्ग विभेद इतना गहरा है कि अमीरों का इंडिया और गरीबों का हिंदुस्तान अलग-अलग नजर आता है। इस वर्ग विभाजन में आप जाति, धर्म, गांव-शहर, छोटे शहर-बड़े शहर, हिंदी माध्यम स्कूल-अंग्रेजी माध्यम स्कूल, उत्तर भारत-दक्षिण भारत, शाकाहारी-मांसाहारी, ऐसे कई और विभाजन जोड़ कर देखिए, सचमुच देश के भीतर दो देश दिखने लगेंगे। ऐसा नहीं है कि ये वर्ग विभाजन हाल में हुआ है, भारत सदियों से इसी तरह के मिजाज का था। लेकिन उस भारत में उदारता और सहिष्णुता कूट-कूट कर भरी थी, जिसकी अब घोर तंगी महसूस हो रही है। पहले लोगों के बीच जाति, धर्म या पैसे को लेकर अंतर था, तब भी आमतौर पर एक-दूसरे के लिए सम्मान था, विरोधी विचारों के लिए जगह थी। अब ऐसा आमतौर पर नहीं दिखता। समाज में एक किस्म की असहिष्णुता तारी है। इस असहिष्णुता को बढ़ाने का काम सत्तातंत्र ने खूब किया है। अब शासकों का भारत और शासितों का भारत अलग-अलग दिखने लगे हैं। शासितों के भारत में कहीं कोई विरोध के स्वर उठें या सरकार के खिलाफ कोई बात करे, या सड़ी-गली मान्यताओं के खिलाफ आवाज उठाए, यह बात शासकों के भारत को नागवार गुजरती है। इसलिए जब वीर दास महिला सुरक्षा को लेकर एक तीखा व्यंग्य करते हैं, तो शासकों वाले भारत को यह बात चुभ जाती है। इस देश में महिलाओं के खिलाफ लगातार अपराध बढ़ रहे हैं। जघन्यता की सारी सीमाएं लांघ कर लड़कियों को प्रताड़ित करने के मामले हाल में ही सामने आए हैं। तब इस बात का बुरा नहीं माना जाता कि हमारे देश में लड़कियों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों हो रहा है। लेकिन कोई उस बारे में विदेशी धरती पर जाकर रहे तो फौरन देशप्रेम याद आ जाता है। कुछ ऐसा ही रवैया किसानों के साथ भी देश में हुआ। एक साल तक किसान अपने हक के लिए सड़क पर बैठे रहे। खालिस्तानी, देशद्रोही, मवाली, नशेबाज जैसे अपशब्द आंदोलनकारी किसानों के लिए कहे गए। खुद प्रधानमंत्री ने आंदोलनजीवी जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया। इस आंदोलन के कारण सात सौ से अधिक किसानों की मौत हो गई। जिन किसानों के अन्नदाता जैसा महान शब्द पर्यायवाची के तौर पर इस्तेमाल होता है, उन दाताओं को याचक बनाने की तैयारी केंद्र सरकार ने कर ली थी। लेकिन जिन हाथों ने हमेशा देश को भोजन दिया है, उन हाथों से देश को एक बार फिर नई खुराक मिली। अन्नदाताओं ने देश को अहिंसक विरोध की सीख दी और लोकतंत्र को बचाने की खुराक पिलाई। किसानों को झुकाने के फेर में लगी सरकार को उनके आगे झुकना पड़ा। पाश के शब्दों में भारत का अर्थ, खेतों के बेटों ने समझा दिया। विगत शुक्रवार 19 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कृषि कानून वापसी का ऐलान किया।

हालांकि इस ऐलान के लिए जिन शब्दों का चयन उन्होंने किया, उसमें यही नजर आया कि प्रधानमंत्री अब भी अपनी गलती स्वीकार करने तैयार नहीं हैं। उनके मुताबिक कृषि कानूनों में कोई खामी नहीं है। पर सरकार ने फिर भी कानून वापसी का फैसला लिया तो निश्चित ही इसके चुनावी निहितार्थ हैं। हालांकि नरेन्द्र मोदी ने इस वापसी के ऐलान में एक बार फिर संसदीय प्रक्रिया को धता बताया। कानून बनाने के वक्त भी उन्होंने इस पर लोकतांत्रिक मूल्यों के हिसाब से चर्चा नहीं कराई, अपनी मर्जी से कानून पारित करवा दिए और उसी तरह अपने मन की बात कहते हुए कानून वापसी की घोषणा कर दी। जबकि कायदे से पहले सरकार को कैबिनेट में इस पर प्रस्ताव पारित कर, संसद में इसे रद्द करवा कर, राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद इसकी घोषणा करना चाहिए थी। लेकिन यहां भी दो तरह के भारत देखने मिले। एक जो संविधान में, संसदीय प्रक्रिया में यकीन रखता है, दूसरा जो मन की बात करता हुआ, कभी भी टीवी पर आकर, कोई भी घोषणा कर देता है। प्रधानमंत्री चुनावी पंचांग को बांचते हुए यह गणना करते हैं कि मतदाताओं को किस मुहूर्त पर लुभाया जा सकता है। जैसे अगर वो शीतकालीन सत्र लगने का इंतजार करते तो किसान आंदोलन को एक साल पूरे हो जाते, संविधान दिवस भी आकर निकल जाता और इससे भाजपा को चुनाव में नुकसान हो सकता था। शायद इसलिए उन्होंने प्रकाश पर्व को इस घोषणा के लिए मुहूर्त बनाया, ताकि उप्र, पंजाब, सब सध जाएं। हालांकि किसानों ने अब तक सरकार की बात पर पूरा भरोसा नहीं किया है। कानून वापसी के ऐलान के बाद अब किसानों ने महापंचायत भी की और ट्रैक्टर रैली भी करने की तैयारी है। वैसे बुधवार को केबिनेट की बैठक में कृषि कानूनों को रद्द किए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई है। संसद में अभी इन कृषि कानूनों को रद्द किए जाने की संवैधानिक प्रक्रिया बाकी है। अब किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर भी सरकार की गारंटी का इंतजार है। किसानों को अपनी आय दोगुनी होने का भी इंतजार है, लेकिन शासकों वाला भारत उस इंतजार की मियाद बढ़ाता जा रहा है। और ऐसे फैसले ले रहा है, जिससे गरीबों के बीच उसके शासन का प्रभामंडल बढ़े। जैसे केबिनेट की बैठक में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना की मियाद मार्च 2022 तक बढ़ाने का फैसला भी हुआ है। इस योजना के तहत 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त अनाज मिलता रहेगा। जाहिर है इस फैसले का संबंध भी चुनाव से है, क्योंकि अगले साल की शुरूआत में ही पांच राज्यों में चुनाव हैं। योजना का नाम कितना भी लुभावना रख दें, मुफ्त के अनाज और सम्मान से अर्जित भोजन की कोई तुलना नहीं हो सकती। शासकों वाला भारत शासित भारत को इसी सम्मान से वंचित रखने की चालें लगातार चल रहा है।

कंगना रनौत : भारत को आजादी कब और कैसे मिली

राम पुनियानी

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि अंग्रेजों के भारत छोड़ने के निर्णय के पीछे कई कारक रहे होंगें। बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर अनुशीलन समिति, हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज के क्रान्तिकारी आन्दोलन और रॉयल इंडियन नेवी द्वारा 1946 में विद्रोह तक, अनेकानेक कारणों ने अंग्रेजों को भारत को स्वतंत्र करने के लिए विवश किया होगा। परन्तु यह निर्विवाद है कि गांधीजी के नेतृत्व में चला स्वाधीनता आन्दोलन इन सबसे अधिक व्यापक था। जैसे-जैसे संकीर्ण राष्ट्रवाद और मुखर, और आक्रामक होता जा रहा है वैसे-वैसे हमारे स्वाधीनता संग्राम के इतिहास को तोड़ने-मरोड़ने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। धार्मिक राष्ट्रवाद का बढ़ता कारवां हमें नए सिरे से समझा रहा है कि हमें आजादी कैसे मिली। अब तक सांप्रदायिक ताकतें अपने आख्यान को बल देने के लिए देश के मध्यकालीन इतिहास का उपयोग करती थीं। अब वे आधुनिक इतिहास, और विशेषकर स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास, को तोड़-मरोड़ रहीं है ताकि एक ओर स्वाधीनता संग्राम की विरासत को कमजोर किया जा सके तो दूसरी ओर उन लोगों का महिमामंडन हो सके जिन्होंने आजादी की लड़ाई से सुरक्षित दूरी बनाए रखी और एक राष्ट्र के रूप में भारत के निर्माण की प्रक्रिया में हिस्सेदारी नहीं की। कंगना रनौत ने दक्षिणपंथी सांप्रदायिक राष्ट्रवाद के प्रति अपने झुकाव को छुपाने की चेष्टा कभी नहीं की। नफरत फैलाने के कारण उनके ट्विटर खाते को स्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। कंगना ने एक टेलीविजन साक्षात्कार में कहा...भारत को आजादी 2014 में मिली जब प्रधानमंत्री मोदी सत्ता में आए। उन्होंने 1947 में देश को मिली आजादी को भीख बताया। उनके इस दावे से इतिहास की उनकी अज्ञानता जाहिर होती है। उन्हें पता ही नहीं है कि भारत ने कई दशकों तक अंग्रेजी शासन के चंगुल से स्वयं को मुक्त करने के लिए कठिन संघर्ष किया और तब कहीं जाकर हमें स्वतंत्रता हासिल हो सकी। उन्हें इस बात का भी कोई इल्म नहीं है कि भारत एक राष्ट्र कैसे बना। परन्तु बात सिर्फ कंगना की अज्ञानता तक सीमित नहीं है। उनका वक्तव्य उस नए आख्यान का भाग है जिसे पिछले कई दशकों से सुनियोजित ढंग से निर्मित किया जा रहा था और जो पिछले कुछ सालों से हमारे सामने परोसा जा रहा है। वैसे कंगना केवल नरेन्द्र मोदी के कथन को आगे बढ़ा रहीं हैं। सन 2014 में सत्ता में आने के बाद मोदी ने कहा था कि 1200 सालों की गुलामी का अंत होने जा रहा है। उनका आशय यह था कि औपनिवेशिक काल के अतिरिक्त वह दौर भी भारत की गुलामी का काल था जब देश के कुछ हिस्सों में भारतीय मुस्लिम राजाओं का शासन था। और अब चूंकि हिन्दू राष्ट्रवाद का शासन आ गया है इसलिए भारत की गुलामी का काल समाप्त हो गया है। धार्मिक राष्ट्रवादी, स्वाधीनता संग्राम का हिस्सा नहीं थे। इसलिए वे अनेकानेक तरीकों से स्वयं को राष्ट्रवादी सिद्ध करने में लगे हुए हैं। इसी संदर्भ में यह दावा किया जा रहा है कि आरएसएस की भागीदारी ने भारत छोड़ो आन्दोलन को जबरदस्त ताकत दी। संघ के थिंकटैंक राकेश सिन्हा लिखते हैं, उस साल अगस्त में चिमूर और अश्ती में कांग्रेस के जुलूसों में अधिकांशतः आरएसएस के कार्यकर्ता शामिल थे। उन्होंने पुलिस थानों पर हमले किये और इन तालुकों की पुलिस ने लोगों का बर्बर दमन किया। जिन लोगों को फांसी और उम्रकैद के सजा दी गई उनमें से अधिकांश संघ के कार्यकर्ता थे। अपनी फंतासी को और विस्तार देते हुए उन्होंने लिखा, आन्दोलन के संघ से बढ़ते जुड़ाव ने खलबली मचा दी। सरकार इस आशंका से भयभीत हो गई कि कहीं देश में सशस्त्र क्रांति न हो जाए क्योंकि आरएसएस और आजाद हिन्द फौज की सोच एक सी थी। यह दावा तत्कालीन आरएसएस प्रमुख गोलवलकर के निर्देश से मेल नहीं खाता। सन 1942 में भी कई लोगों के हृदय में प्रबल भावनाएं थीं। उस समय भी, संघ का काम चलता रहा। संघ ने प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी न करने का संकल्प लिया। (श्री गुरुजी समग्र दर्शन, खंड 4, पृष्ठ 40)।

सांप्रदायिक राष्ट्रवाद के कुछ अन्य झंडाबरदार यह दावा कर रहे हैं कि भारत की आजादी में गांधीजी के नेतृत्व में चले आन्दोलन की कोई खास भूमिका नहीं थी। इस सिलसिले में वे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली के भाषण को उद्दत करते हैं, जिसे 1982 में इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल रिव्यु में रंजन बोरा के एक आलेख में प्रकाशित किया गया था। इस भाषण को एक निर्विवाद सत्य के रूप में प्रचारित किया जा रहा। तथ्य यह है कि गांधीजी के नेतृत्व में चले भारत छोड़ो आन्दोलन ने ब्रिटिश सरकार की चूलें हिला दीं थीं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि अंग्रेजों के भारत छोड़ने के निर्णय के पीछे कई कारक रहे होंगें। बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर अनुशीलन समिति, हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज के क्रान्तिकारी आन्दोलन और रॉयल इंडियन नेवी द्वारा 1946 में विद्रोह तक, अनेकानेक कारणों ने अंग्रेजों को भारत को स्वतंत्र करने के लिए विवश किया होगा। परन्तु यह निर्विवाद है कि गांधीजी के नेतृत्व में चला स्वाधीनता आन्दोलन इन सबसे अधिक व्यापक था। उसने लोगों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ उठ खड़े होने के लिए प्रेरित किया, भारतीयों को निडर बनना सिखाया और उन सिद्धांतों के पक्ष में खड़ा किया जो आगे चल कर भारतीय संविधान का आधार बने। गांधीजी के नेतृत्व में चला स्वाधीनता आन्दोलन दुनिया का सबसे बड़ा जनांदोलन था। दक्षिणपंथी साम्प्रदायिक राष्ट्रवादियों के आख्यान में स्वाधीनता आंदोलन के एक विशिष्ट और अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू को जानबूझकर नजरअंदाज किया जाता है और वह यह कि स्वाधीनता संग्राम केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ नहीं था बल्कि वह भारत के एक राष्ट्र के रूप में उद्भव की प्रक्रिया का अंग भी था।

कपिल देव ने बताया, कौन है टीम इंडिया का बेस्ट ऑलराउंडर

नई दिल्ली। भारत के पूर्व क्रिकेटर कपिल देव की गिनती भारत के बेस्टऑलराउंडर में होती है। 1994 में उनके संन्यास लेने के बाद कई क्रिकेटर आए लेकिन कोई भी कपिल देव के जैसा कारनामा नहीं कर पाए। हार्दिक पांड्या की तुलना अक्सर उनसे की जाती है। लेकिन पिछले कुछ समय से उनकी फॉर्म ने कई सवाल उठाए हैं। कपिल देव ने बताया कि वो टीम इंडिया के दो खिलड़ियों को बेहतरीन ऑलराउंडर मानते हैं। कपिल देव)ने रॉयल कलकत्ता गोल्फ कोर्स से कहा,'मैं इन दिनों सिर्फ क्रिकेट देखने और खेल का आनंद लेने जाता हूं। मैं आपके नजरिए से नहीं देखता। मेरा काम खेल का आनंद लेना है। मैं अश्विन को कहूंगा, उन्हें सलाम। जडेजा भी शानदार क्रिकेटर है, लेकिन उसकी बल्लेबाजी बेहतर हुई है तो गेंदबाजी खराब हो गई है।जब भारत को उसकी जरूरत होगी, उनहेंरन मिलेंगे। लेकिन वह एक गेंदबाज के रूप में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। कपिल देव ने राहुल द्रविड़ की तारीफ की और कहा कि वो कोच के रुप में अधिक सफल होंगे। कपिल देव ने कहा,'वह एक अच्छे इंसान हैं, एक अच्छे क्रिकेटर हैं। वह एक क्रिकेटर की तुलना में एक कोच के रूप में बेहतर काम करेंगे क्योंकि क्रिकेट में उनसेबेहतर किसी ने नहीं किया है। मैं बस अपनी फिंगर क्रॉस कर रहा हूं। आप उनके डेब्यू के बाद सिर्फ उनको नहीं आंक सकते, आप एक प्रदर्शन से नहीं जाते। समय के साथ, राहुल क्या करेंगे, हमें पता चल जाएगा। आप केवल सकारात्मक सोचते हैं।'

टेस्ट डेब्यू में सेंचुरी जड़ने वाले श्रेयस अय्यर ने इंस्टाग्राम पर लिखी दिल की बात

नई दिल्ली। भारत और न्यूजीलैंड के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज के पहले टेस्ट मैच में भारत की तरफ से श्रेयस अय्यर का ड्रीम डेब्यू हुआ। उन्होंने अपने टेस्ट डेब्यू में सेंचुरी जड़कर अपना नाम इतिहास में दर्ज कर दिया। भारत की तरफ से अपने पहले टेस्ट मैच में शतक जड़ने वाले वो 16 वें क्रिकेटर बन गए हैं। इस सूची में लाला अमरनाथ, गुंडप्पा विश्वनाथ, सौरव गांगुली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गजों के नाम हैं। भारत के महान बल्लेबाजों में से एक सुनील गावस्कर ने अय्यर को टेस्ट कैप सौंपी थी। अय्यर भारत के लिए टेस्ट में डेब्यू करने वाले 303वें नंबर के खिलाड़ी बन गए है। अय्यर ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाअंट से तस्वीर पोस्ट की। जिसमें गावस्कर ने उन्हें डेब्यू कैप सौंपी। उन्होंने इस तस्वीर को शेयर करते हुए कैप्शन लिखा,'सुनील गावस्कर सर से अपनी टेस्ट कैप पाने से लेकर रेड बॉल क्रिकेट में अपने देश का प्रतिनिधित्व करने तक, मैं इन दो दिनों को जीवन भर अपने साथ रखूंगा। आप सभी को शुभकामनाओं, प्यार और अद्भुत समर्थन के लिए शुक्रिया।'

अय्यर ने शुक्रवार को 105 रन की पारी खेलने के बाद संवाददाताओं से कहा, 'सुनील गावस्कर सर ने मुझे कैप सौंपते समय महत्वपूर्ण बात की थी। उन्होंने कहा था आपको अतीत के बारे में सोचने की जरूरत नहीं है और आपको भविष्य के बारे में भी नहीं सोचना है। आपको केवल वर्तमान के बारे में सोचना है और अगली गेंद पर ध्यान केंद्रित करना है। मैंने यही किया। उन्होंने कहा कि सुनील सर से कैप हासिल करना परीकथा जैसा था। मैं यह सोच रहा था कि राहुल सर मुझे कैप सौंपेंगे। दोनों ही इस खेल के दिग्गज हैं और दोनों में से कोई भी कैप प्रदान करता मुझे खुशी होती। अय्यर अपने आउट होने के तरीके से संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने कहा कि यह बहुत अच्छा अहसास था और जिस तरह से चीजें आगे बढ़ी उससे मैं खुश था लेकिन मैं जिस तरह से आउट हुआ उससे मैं संतुष्ट नहीं हूं। भारत की पहली पारी दूसरे दिन 345 रनों पर सिमट गई। कीवी टीम ने ठोस शुरूआत करते हुए पहली पारी में बिना विकेट हुए 129 रन बना लिए हैं। वो भारत से अभी पहली पारी के आधार पर 216 रन पीछे हैं।

नीदरलैंड ने साउथ अफ्रीका का दौरा बीच में छोड़ने का लिया फैसला

नई दिल्ली। नीदरलैंड ने साउथ अफ्रीका के दौरे को बीच में छोड़ने का फैसला किया है। इसकी वजह कोविड 19 के नए वेरिएंट की उपस्थिति है। दोनों टीमों के बीच तीन टेस्ट मैचों की सीरीज पहला मैच शुक्रवार को खेला जा रहा है। कई देशों ने नए वेरिएंट के सामने आने के बाद दक्षिण अफ्रीका से अपने देश में आने वालों पर बैन लगा दिया है। ब्रिटेन ने दक्षिण अफ्रीका को रेड लिस्ट में डाल दिया है। दोनों टीमों के बीच अलद-अलग जगहों पर तीन वनडे खेले जाने हैं। नीदरलैंड ने सेंचुरियन में चल रहे वनडे के बाद वापस लौटने का फैसला किया है। नीदरलैंड ने पहले वनडे में चॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। साउथ अफ्रीका की टीम को मेहमान टीम ने निर्धारित 50 ओवर में 8 विकेट खोकर 277 रन पर रोक दिया। काइल वेरेने ने साउथ अफ्रीका की तरफ से सर्वाधिक 95 रन बनाए। खबर लिखे जाने तक लक्ष्य का पीछा करते हुए नीदरलैंड ने 2 ओवर में बिना विकेट के नुकसान के 11 रन बना लिए हैं। बारिश की वजह से अभी मैच रुका हुआ है।। दक्षिण अफ्रीका में कोरोना वायरस के नए वेरिएंट आने से भारत के साउथ अफ्रीका दौरे पर भी संकट मंडरा रहा है। टीम इंडिया को दिसंबर के दूसरे सप्ताह में दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना होना है। इस दौरे पर टीम इंडिया को तीन-तीन मैचों की टेस्ट, वनडे इंटरनैशनल और टी20 इंटरनैशनल सीरीज खेलनी है। बीसीसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका से जब तक हमें जमीन स्थिति की वास्तविक जानकारी नहीं मिल जाती है तब तक हम अपने अगले कदम के बारे में नहीं बता पाएंगे। मौजूदा प्लान के मुताबिक , भारतीय टीम को 8 या 9 दिसंबर को मुंबई में न्यूजीलैंड सीरीज खत्म होने के बाद साउथ अफ्रीका के लिए रवाना होना है।

दूसरे दिन का खेल खत्म, कीवी टीम ने बिना विकेट खोए बनाए 129 रन

कानपुर। भारत और न्यूजीलैंड के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला टेस्ट कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में खेला जा रहा है। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने पर न्यूजीलैंड का स्कोर बिना किसी नुकसान के 129 रन है। विल यंग 75 और टॉम लैथम 50 रन बनाकर क्रीज पर डटे हुए हैं। इससे पहले भारत ने पहली पारी में 345 रन बनाए। भारत के लिए श्रेयस अय्यर ने 105 रन की शतकीय पारी खेली। उनके अलावा रविंद्र जडेजा ने 50, कप्तान अजिंक्य रहाणे ने 35, रविचंद्रन अश्विन ने 38 और चेतेश्वर पुजारा ने 26 रन बनाए। 14.15 ढटः न्यूजीलैंड ने अपनी पहली पारी में चायकाल तक बिना किसी नुकसान के 72 रन बना लिए हैं। टॉम लाथम 23 रन पर और विल यंग 46 रन बनाकर खेल रहे हैं। न्यूजीलैंड अभी भारत के स्कोर से 273 रन से पीछे है। यंग ने 88 गेंदों पर अबतक आठ चौके जबकि लाथम ने 72 गेंद पर दो चौके लगाए हैं।

पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर ने विराट कोहली को बताया इस युग का बेस्ट बल्लेबाज

नई दिल्ली। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर ने कहा कि विराट कोहली इस पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं। मौजूदा समय में आमिर अबू धाबी में टी-10 लीग में खेल रहे हैं। उन्होंने कहा कि हालांकि विराट कोहली को गेंदबाजी करते हैं तो वह किसी अन्य मुद्दे पर फोकस नहीं करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वह इस युग के बेस्ट बल्लेबाजों में से एक है। विराट कोहली को मैदान में उनके जोश और एग्रेशन के लिए जाना जाता है। हालांकि उन्होंने 2019 के बाद से कोई शतक नहीं लगाया है। इसके बावजूद उनका बल्लेबाजी औसत 50 से ज्यादा है। कोहली के तेजतर्रार स्वभाव को ध्यान में रखते हुए पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बताया। उन्होंने यह जवाब उस वक्त दिया जब उनसे दुनिया के तीन महान बल्लेबाजों के नाम पूछे गए। आमिर ने जी न्यूज इंग्लिश से कहा,'मेरी राय में विराट कोहली इस युग के बेस्ट बल्लेबाज है। हालांकि मुझे उनके खिलाफ गेंदबाजी करना कभी मुश्किल नहीं लगा। मुझे स्टीव स्मिथ के खिलाफ व्यक्तिगत रूप से गेंदबाजी करना मुझे कठिन लगता है।

गैस सिलेंडर में लगी अचानक आग,फायर बिग्रेड ने बुझाई आग

अखंड भारत संदेश

किशनी। थाना क्षेत्र के ग्राम हिन्दूपुर समान में एक घर मे अचानक आग लग गयी आग लग गयी आग लगने से घर मे रखा गृहस्थी का सामान जल गया पति पत्नी आग लगने के समय खेतो पर कार्य कर रहे थे,जानकरी पर फायर ब्रिगेड पहुँच गयी,ग्राम प्रधान और लेखपाल ने भी पहुँचकर पीड़ित को मदद का भरोसा दिया है,ग्राम वासी लल्लू राठौर पुत्र रामहसन गुरुवार सुबह पत्नी को लेकर खेत पर कार्य करने चले गए घर पर बच्चे थे,तभी अचानक घर मे रखे गैस सिलेंडर में आग लग गयी,आग लगते ही घर मे रखा गृहस्थी का सामान जल गया,ग्रामीणों ने आग पर काबू पाने का प्रयाश किया पर सफलता नही मिली तो सूचना पुलिस और फायर विग्रेड को दी,फायर विग्रेड ने पहुँचकर आग बुझाई,जानकरी पर लेखपाल अंकुर यादव ब प्रधान उमेश शर्मा ने पहुचकर अपनी रिपोर्ट बनाकर एसडीएम को दी,एसडीएम जयप्रकाश ने बताया कि पीडित को आर्थिक मदद दिलाई जाएगी।

गोकुलपुर खेत मे निकले दो अजगर लोगों में हुई सिहरन

अखंड भारत संदेश

किशनी। क्षेत्र के ग्राम गोकुलपुर अरसारा कर निकट खेतों में अजगर निकलने से बहाँ काम कर रहे किसानों में दहशत फैल गई। गांव के लोगों ने अजगर निकलने की सूचना वन विभाग को दी टीम ने मौके पर जाकर दोनो अजगरों को पकड़ लिया, गुरुवार की दोपहर ग्राम गोकुलपुर के कुछ किसान अपने-अपने खेतों में कार्य कर रहे थे। इसी दौरान पड़ोस के किसान सूबेदार जाटव के एक खेत में करीब 20 फीट के लंबे दो अजगर देखकर किसानों और ग्रामीणों में दहशत और अफरा तफरी का माहौल बन गया। किसानों ने पास जाकर देखा कि दोनो अजगर झाड़ी में छिपे बैठे है, खेत में अजगर निकलने की सूचना मिलते ही दर्जनों ग्रामीण भी मौके पर एकत्र हो गए। जिन्होंने वन विभाग को सूचना दी सूचना पर पहुची टीम ने दोनों अजगरों को पकड़ लिया और साथ ले गए,दो दो अजगर निकले की सूचना पर आसपास गांव की भारी भीड़ पहुँच गयी थी '

भाकियू किसान ने आंदोलन छेड़ने की दी चेतावनी

अखंड भारत संदेश

किशनी। नगर से गुजर रहे समान माइनर के हालात सिंचाई विभाग की लापरवाही से बिगड़ गए हैं।अधिकारियों की मिलीभगत से ठेकेदार द्वारा जेसीबी से सफाई कराने से माइनर की दीवालें ध्वस्त हो गयी हैं तथा सिल्ट की सफाई भी नहीं हो पाई है।लोगों ने विभागीय अधिकारियों व ठेकेदार पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। किशनी नगर के मध्य से होकर समान माइनर गुजरता है। पिछली सरकार में माइनर की दीवालों को पक्का कराने के लिये करोड़ों की धनराशि मंजूर हुई थी।दो वर्ष पूर्व करोड़ो रुपए की लागत से माइनर का निर्माण हो सका।निर्माण के समय इसमें बेहद घटिया सामिग्री का प्रयोग किया गया था।लेकिन अधिकारियों की सरपरस्ती के कारण कोई कार्रवाई नहीं हो सकी।पिछले कुछ दिनों से माइनर में सफाई का कार्य चल रहा है।माइनर में ठेकेदार द्वारा जेसीबी का प्रयोग किया जा रहा है इससे माइनर की दीवालों को भारी नुकसान पहुंच रहा है।

भाकियू किसान के पदाधिकारियों ने माइनर की जेसीबी से सफाई न कराने की बात कही थी।जिस पर सिंचाई विभाग इटावा प्रखंड के एसडीओ धर्मपाल मित्तल ने मजदूरों से सफाई कराने का आश्वासन दिया था। रविवार को किसान यूनियन के जिलाध्यक्ष अनुरूद्ध दुबे ने जेसीबी से सिल्ट साफ कर रहे लोगों को चलता कर दिया था पर बुधवार देर रात ठेकेदार ने बटपरू पुलिया के पास जेसीबी से सफाई शुरू करा दी।सुबह जानकारी होने पर भाकियू किसान पदाधिकारियों व किसानों में आक्रोश फैल गया। भ0कि0यू0 किसान के तहसील प्रभारी उमेश पाण्डेय ने इसकी शिकायत एसडीएम जयप्रकाश से की।उन्होंने आरोप लगाया कि उनके कई बार एसडीओ से कहने के बावजूद सफाई मजदूरों से न कराके खानापूर्ति की जा रही है।मजदूरों से सफाई न होने पर पानी के बहाव में समस्या आएगी।जल्द ही वह इसकी शिकायत डीएम से करेंगे,सुधार न होने पर जिलाध्यक्ष से बात कर धरना प्रदर्शन करेंगे।एसडीएम जयप्रकाश ने बताया कि माइनर की सही सफाई न होने की शिकायत किसान नेताओं ने उनसे की है।उन्होंने एसडीओ को शुक्रवार को बुलाया है।किसी भी सूरत में गलत कार्य तथा अधूरी सफाई नहीं होने दी जाएगी।

ट्रेक्टर की जुताई का हिसाब करने जा रहे ब्यक्ति को जमकर धुना

अखंड भारत संदेश

किशनी। ग्रामसभा राजपुर समान निवासी राकेश पुत्र जग्गीसिंह यादव ने तहरीर दी कि बुधवार की दोपहर वह अपने ट्रेक्टर की जुताई का हिसाब केरने जा गांव बल्लमपुर रहा था। रास्ते में बल्लमपुर तथा भगवन्तपुर के बीच उनके ही गांव के जयवीर पुत्र जग्गीसिंह तथा उसके रिश्तेदार शिवम यादव पुत्र सुखबीर,संदीप व बबलू पुत्रगण जयवीर यादव निवासी डिमार थाना बसरेहर इटावा ने उन्हें गालियां दीं और लाठियों से मारपीट की। मारपीट से उनके सर में चोटें आई हैं। चीखपुकार करने पर गांव के लोगों ने आकर बचाया। पुलिस ने मुकद्दमा दर्ज

चौकी प्रभारी ने संभाला किशनी कोतवाली का चार्ज

अखंड भारत संदेश

किशनी। थाना क्षेत्र की पुलिस चौकी कुसमरा के इंचार्ज रहे धर्मेन्द्र कुमार यादव को एसपी ने किशनी कोतवाली का चार्ज दिया है, गुरुवार को थाना प्रभारी धर्मेन्द्र कुमार ने थाने का चार्ज लिया और चार्ज संभालते ही थाना प्रभारी ने कस्बा के सदर बाजार सहित अन्य स्थानों पर पुलिस बल के साथ पैदल भ्रमण किया,थाना प्रभारी ने वार्ता के दौरान कहा कि पीड़ितो को न्याय दिलाना मेरी पहली प्राथमिकता है। किसी भी सूरत पर थाने में आने बाले शिकायतकर्ताओ के साथ स्टाफ या अन्य की बदसलूकी बर्दास्त नही की जायेगी। आने बाले पीड़ितों की हर सम्भव मदद की जायेगी , अपने स्टाफ से सख्त लहजे में कहा है कि दोषियों के खिलाफ कार्यवाही करके उन्हें जेल की सलाखों की पीछे पहुंचाना है। सट्टेबाज, जुआ, अबैध कच्ची शराब तथा अबैध कारोबार में लिप्त माफिया या तो कोतवाली में आने बाली हदें छोड़ दे। नही तो उन्हें चिन्हित करके उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही अमल में लायी जाएगी।

संविधान दिवस पर पुलिस कर्मियों ने ली शपथ

भदोही। संविधान दिवस के अवसर पर पुलिस कार्यालय एवं जनपद के समस्त थानों, चैकी पर अधिकारियों, कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई। संविधान दिवस के अवसर पर क्षेत्राधिकारी ज्ञानपुर अशोक कुमार सिंह द्वारा पुलिस कार्यालय में उपस्थित समस्त अधिकारी, कर्मचारीगण द्वारा भारत के संविधान की प्रस्तावना- ह्यहम भारत के लोग भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न समाजवादी, पंथ निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्यायह्ल की शपथ दिलायी गई। संविधान में वर्णित मूल कर्तव्यों को पढ़ाया गया व उनको पालन करने के लिए बताया गया। इसी क्रम में जनपद के समस्त थानों चैकियों पर कोविड-19 गाइडलाइन का पालन करते हुए उपस्थित कर्मियों को शपथ दिलाई गई।

मतदाता जागरुकता अभियानः आटो चालक करेंगे जागरुक

जिलाधिकारी ने कलेक्ट्रेट मुख्यालय से आटो रैली को दिखाई हरी झंडी

अखंड भारत संदेश

भदोही। स्वीप मतदाता जागरूकता अभियान के तहत आज कलेक्ट्रेट मुख्यालय गेट से 75 ऑटो की रैली निकाली गई। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। जिलाधिकारी ने ऑटो चालकों से कहा कि आप लोग अपने गांवों में जाकर लोगों को प्रेरित करें, कि जो बच्चे व बच्चियां, एक जनवरी 2022 को 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहे हैं, उनका नाम मतदाता सूची में जोड़वाएं। तत्पश्चात मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह ने आज जिला पंचायत बालिका इंटर कॉलेज ज्ञानपुर में मतदाता जागरूकता अभियान से संबंधित एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रैली का झंडी दिखाती जिलाधिकारी आर्यका अखौरी

मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह ने बालिकाओं को जानकारी देते हुए कहा कि 18 वर्ष आयु वर्ग वालों को संविधान ने मतदान का अधिकार दे रखा है। बालिकाओं की जिम्मेदारी है कि वे न सिर्फ खुद मतदान करें बल्कि दूसरों को भी मतदान करने के लिए प्रेरित करें। हम सबकी जिम्मेदारी है कि मतदान पर्व का हिस्सा बनें। शत प्रतिशत मतदान से ही योग्य जनप्रतिनिधि का चुनाव हो सकता है। इस दौरान छात्राओं को शपथ दिलाई गई तथा बढ़-चढकर मतदान में भागीदारी करने के लिए प्रेरित किया गया। उन्होंने कहा कि यदि आप 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके हैं और आपका नाम मतदाता सूची में नहीं है तो 27 नवंबर को विशेष कैंप में भाग लेकर नाम सूची में जोड़वा सकते हैं। बताया कि नये मतदाताओं को मतदाता सूची में सम्मलित करने के लिए प्रारूप-6, सूची में संसोधन के लिए प्रारूप-7, प्रवासी भारतीयों का नाम शामिल करने के लिए प्रारूप-6ए के अलावा प्रारूप आठ भी उपलब्ध है। प्रारूप-8ए द्वारा एक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के अंदर दूसरे मतदेय स्थल पर स्थानांतरण के लिए भरा जा सकता है। कार्यक्रम में जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला पंचायत बालिका इंटर कालेज ज्ञानपुर की शिक्षिकाएं एवं 250 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

बेटी की ससुराल जा रहे पिता को नामजदों ने लूटा

किशनी। जनपद इटावा के थाना ऊसराहार गांव रम्पुरा पचार निवासी लालाराम पुत्र मंशोली शाक्य ने तहरीर दी कि उनकी बेटी थानाक्षेत्र के गांव सींगपुर में ब्याही है। उनकी बेटी वंदना तथा दामाद विकास बाबू जब दिल्ली गये थे तो उनके पास 15 हजार नकद,सोने की अंगूठी,तथा कपडे आदि रख कर गये थे। वह बुधवार को उक्त सामान अपने बेटी को देने सींगपुर जा रहा था। शाम करीब आठ बजे रास्ते में सूरजसिंह पुत्र होरीलाल,त्रिवेदी पुत्र होरीलाल,बिपिन पुत्र सूरजसिंह निवासीगण सींगपुर एक अज्ञात ब्यक्ति के साथ मिले। एह उक्त लोगों को देखकर तेज कदमों से चलने लगा और ठोकर खाकर जमीन पर गिरपडा। आरोप है कि उक्त चारों लोगों ने उनके साथ मारपीट कर रुपए व अंगूठी छींनली तथा गालियां देते हुये गांव की ओर चले गये।

सेंट्रल हॉल में बोले राष्ट्रपति

भारत ने लिखी है लोकतांत्रिक विकास की अद्भुत गाथा

नई दिल्ली(एजेंसी)। संविधान की 72 वीं वर्षगांठ के मौके पर संसद के केन्द्रीय कक्ष में आज राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के नेतृत्व में संविधान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहाकि 72 साल पहले इसी सेंट्रल हॉल में हमारे संविधान निमार्ताओं ने इस दस्तावेज को भारत के सुनहरे भविष्य के लिए स्वीकार किया था। करीब सात दशक की छोटी सी समयावधि में ही भारत के लोगों ने लोकतांत्रिक विकास की अद्भुत गाथा लिख दी है।

इसने पूरी दुनिया को चकित कर दिया है। उन्होंने कहाकि मैं यह मानता हूं कि भारत की यह विकास यात्रा, हमारे संविधान के बल पर ही आगे बढ़ती रही है। राष्ट्रपति कोविंद ने कहा कि आजादी के समय, देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को यदि ध्यान में रखा जाए तो भारतीय लोकतंत्र मानव इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक माना जा सकता है। इस उपलब्धि के लिए हम संविधान निमार्ताओं की दूरदर्शिता और जन-गण-मन की बुद्धिमत्ता को नमन करते हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे संविधान में वे सभी उदात्त आदर्श समाहित हैं जिनके लिए दुनिया के लोग भारत की ओर सम्मान और आशा भरी दृष्टि से देखते रहे हैं। उन्होंने कहाकि ह्यहम भारत के लोगह्ल इन शब्दों से आरम्भ होने वाले हमारे संविधान से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत का संविधान लोगों की आकांक्षाओं की सामूहिक अभिव्यक्ति है।

राष्ट्रपति ने कहाकि हमारे देश में न केवल महिलाओं को आरम्भ से ही मताधिकार प्रदान किया गया बल्कि कई महिलाएं संविधान सभा की सदस्य थीं और उन्होंने संविधान के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया। पश्चिम के कुछ विद्वान कहते थे कि भारत में वयस्क मताधिकार की व्यवस्था विफल हो जाएगी। परन्तु यह प्रयोग न केवल सफल रहा, अपितु समय के साथ और मजबूत हुआ है। यहां तक कि अन्य लोकतंत्रों ने भी इससे बहुत कुछ सीखा है। राष्ट्रपति ने कहाकि मुझे प्रसन्नता है कि आज संविधान सभा की चचाओं तथा संविधान के कैलग्रिाफ्ड वर्जन और अद्यतन संविधान के डिजिटल संस्करण जारी कर दिए गए हैं। इस प्रकार, टेक्नॉलॉजी की सहायता से, ये सभी अमूल्य दस्तावेज सबके लिए सुलभ हो गए हैं। संबोधन से पहले राष्ट्रपति कोविंद ने संविधान बनाने वाली संविधान सभा की चचाओं के डिजिटल संस्करण को भी जारी किया। उन्होंने संविधान की मूल प्रति का डिजिटल संस्करण अद्यतन संविधान भी जारी किया। इसके अलावा उन्होंने संविधान पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी पोर्टल का शुभारंभ भी किया। संबोधन समाप्त होने के बाद उन्होंने संविधान की प्रस्तावना का पाठ किया और केन्द्रीय कक्ष में मौजूद सभी लोगों ने इसमें हिस्सा लिया।

अखिलेश यादव का हमला, भाजपा का दरवाजा यूपी से खुला था और यहीं से बंद होगा

लखनऊ। संविधान दिवस के मौके पर शुक्रवार को समाजवादी पार्टी के प्रमुख और उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा का दरवाजा यहीं (यूपी) से खुला था, इस बार उत्तर प्रदेश की जनता ने तय किया है कि यहीं से दरवाजा बंद होगा और सत्ता से बाहर होंगे। 2022 का चुनाव कोई मामूली चुनाव नहीं है। अंबेडकरवादी और समाजवादी मिलकर 2022 में भाजपा का सफाया कर देंगे। सपा प्रमुख यादव ने शुक्रवार को कांशीराम स्मृति उपवन सांस्कृतिक स्थल में संविधान बचाओ महाआंदोलन राष्ट्रीय मंच द्वारा आयोजित भारतीय संविधान दिवस समारोह व संविधान बचाओ विराट महापंचायत को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर जमकर निशाना साधा। अखिलेश ने कहा कि लोकतंत्र में जो जनता को दुख देता है, समय आने पर जनता उनसे हिसाब किताब करती है। इसलिए जनता ने फैसला किया है कि इस बार भाजपा का सफाया होगा। इस बार अंबेडकरवादी और समाजवादी मिलकर इन्हें हटा देंगे। उन्होंने कहा, यह कोई नया नहीं है, बाबा साहेब के साथ डॉ. राममनोहर लोहिया मिलकर काम करना चाहते थे। फिर से हम लोगों ने कोशिश की पर वह सपना पूरा नहीं हुआ। लेकिन हमने उम्मीद नहीं छोड़ी है और 2022 में यह सपना जरूर पूरा होगा। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में अखिलेश यादव ने बसपा प्रमुख मायावती से गठबंधन किया था। लेकिन सपा प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों में महज पांच सीटों पर सिमट गई जबकि बसपा को दस सीटों पर जीत मिली थी।

अपने संबोधन की शुरूआत में यादव ने इस आयोजन के लिए पूर्व सांसद सावित्री बाई फुले के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि हम समाजवादी लोग आपके संकल्प के साथ खड़े हैं और संविधान बचाने के लिए हम आपके साथ हैं। यादव ने बिना नाम लिए प्रधानमंत्री पर निशाना साधते हुए कहा, जो लोग यहां से निकले, यहीं से दिल्ली का रास्ता बनाया, उनके लिए मैंने कहा था यहीं से भाजपा का दरवाजा खुला और इस बार उत्तर प्रदेश की जनता ने तय किया है कि इस बार दरवाजा बंद होगा और वह सत्ता से बेदखल होंगे।

उन्होंने नोट बंदी और कृषि कानूनों को वापस लिए जाने के प्रधानमंत्री के फैसलों की चर्चा करते हुए उन पर तंज कसा। सपा प्रमुख ने पंचायत चुनाव में बेईमानी का आरोप लगाते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर भी जमकर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि अगर कोई अपना अधिकार मांगेगा तो पुलिस लाठियों से पीटेगी और बाल पकड़कर खींचेगी।

भाजपा सरकार के अहंकार और अत्याचार के लिए जाना जाएगा किसानों का सत्याग्रह : प्रियंका

लखनऊ। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने किसानों के आंदोलन का एक साल पूरा होने के मौके पर शुक्रवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधा और दावा किया कि इस सत्याग्रह को भाजपा सरकार के अहंकार एवं अत्याचार के लिए जाना जाएगा। उन्होंने ट्वीट किया, किसान आंदोलन का एक साल। किसानों के अडिग सत्याग्रह, 700 किसानों की शहादत और निर्मम भाजपा सरकार के अहंकार व अन्नदाताओं पर अत्याचार के लिए जाना जाएगा। लेकिन भारत में किसान की जय-जयकार हमेशा थी है और रहेगी। किसानों के संघर्ष की जीत इसका प्रमाण है। जय किसान। गौरतलब है कि कई किसान संगठन तीनों केंद्रीय कृषि कानूनों को निरस्त करने, न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी देने और कुछ अन्य मांगों को लेकर पिछले एक साल से दिल्ली के निकट विभिन्न स्थानों पर आंदोलन कर रहे हैं। सरकार ने कृषि कानूनों को निरस्त करने का फैसला किया है, हालांकि किसान संगठन एमएसपी की कानूनी गारंटी और कुछ अन्य मांगों को पूरा किए जाने पर जोर दे रहे हैं और उन्होंने अपना आंदोलन जारी रखा है।

पीएम मोदी से मिले सीएम मनोहर लाल, कहा– हरियाणा में एमएसपी से ज्यादा पर हो रही फसलों की खरीद

चंडीगढ़। हरियाणा के सीएम मनोहर लाल ने शुक्रवार को नई दिल्ली में पीएम नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच कई मुद्दों पर चर्चा हुई। कृषि कानूनों की वापसी की घोषणा के बाद सीएम मनोहर की पीएम से यह पहली मुलाकात थी। पीएम से मुलाकात के बाद मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने हरियाणा कैबिनेट में फेरबदल व विस्तार के बारे में सस्पेंस बनाए रखा। उन्होंने कहा कि सस्पेंस बना रहे तो आपको भी आनंद हमें भी आनंद। एमएसपी के मुद्दे पर मनोहर लाल ने कहा कि हरियाणा में एमएसपी पर ज्यादा पर फसलों की खरीद हो रही है। मनोहर लाल ने कहा कि पीएम ने बाढ़सा में एम्स के कार्यक्रम के दौरान हरियाणा के काम की तारीफ की थी। उन्होंने इसके लिए पीएम का आभार जताया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में गरीबों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से अंतोदय परिवार उत्थान योजना के तहत अंत्योदय ग्राम मेले 29 से 15 दिसंबर तक लगाए जा रहे हैं। इनमें ऐसे डेढ़ लाख परिवारों को बुलाया जाएगा जिनकी आय डेढ़ लाख रुपये से

कम है। मनोहर लाल ने कहा कि पीएम हरियाणा की आस यानी आटो अपील सिस्टम से भी काफी प्रभावित हुए हैं। इसमें व्यक्ति का कार्य यदि तय समय में नहीं होता है तो उसकी अपील संबंधित विभाग के उच्चाधिकारी के पास स्वयं पहुंच जाएगी। इसके अलावा दृश्य योजना की जानकारी दी। इसमें ड्रोन से वन क्षेत्र सहित राजस्व क्षेत्र की मैपिंग वर्ष में दो बार की जाएगी। स्वामित्व योजना के तहत अब लाल डोरा की जमीन ही नहीं बल्कि पूरे आबादी क्षेत्र की मैपिंग कराई जाएगी।

सीएम ने कहा कि प्रधानमंत्री ने प्रदूषण के मुद्दे पर ज्यादा सतर्कता बरतने को कहा है। पराली न जले और प्रदूषण को किस तरह कम किया जा सके, इसके लिए प्रधानमंत्री ने कुछ दिशा निर्देश दिए हैं। प्रधानमंत्री को स्वच्छता सर्वे के बारे में बताया है। उन्होंने ग्रामीण स्वच्छता पर जोर देने को कहा है। हरियाणा बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान को सफलता मिली है। 856 के अनुपात में 913 का आंकड़ा आया है।

मनोहर लाल ने कहा कि उन्होंने आर्बिटल रेल कारिडोर के शिलान्यास और गीता जयंती उत्सव के लिए 9 से 14 दिसंबर तक के लिए प्रधानमंत्री को आमंत्रण दिया है। प्रधानमंत्री ने गीता जयंती महोत्सव में आनलाइन जुड़ने की सहमति दी है। कृषि कानूनों के मुद्दे पर सीएम ने कहा कि 29 नवंबर को जैसे ही संसद में तीन कृषि कानून वापस होने की संवैधानिक प्रक्रिया पूरी होगी वैसे ही किसान भी अपने घरों को लौट जाएंगे। ऐसी उम्मीद हमें है।

लालू प्रसाद की तबीयत बिगड़ी, एम्स की इमरजेंसी में कराया गया भर्ती

नई दिल्ली। राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की तबीयत अचानक बिगड़ गई है। उन्हें दिल्ली के एम्स में भर्ती कराया गया है। डॉक्टरों के अनुसार उन्हें बुखार के साथ चक्कर आ रहा है। जांच के लिए उनका ब्लड लिया गया है। फिलहाल रिपोर्ट का इंतजार है। हालांकि डॉक्टर का कहना है कि ऐसी कोई बात नहीं है जिसे गंभीर माना जाए। लालू पिछले तीन दिनों से बिहार में थे। वहां सीबीआई कोर्ट में पेशी के साथ ही राजद के कार्यालय में कार्यक्रमों में भी शामिल हुए थे। इस दौरान जीप चलाते हुए लालू का वीडियो खूब वायरल हुआ। अपनी पिछली बिहार यात्रा के दौरान भी लालू की तबीयत बिगड़ गई थी। अचानक बिहार का दौरा बीच में रद कर ठीक दिवाली से पहले उन्हें वापस दिल्ली आना पड़ा था। उस दौरान भी लालू ने दस दिनों के प्रवास में उपचुनाव में प्रचार भी किया था। साथ ही इन 10 दिनों में रोज दर्जनों लोगों से मुलाकात भी की था। इस कारण ही उनकी तबीयत फिर से नासाज होने की बात कही जा रही थी। कई साल से लालू की तबीयत ठीक नहीं चल रही है। इसी वजह से जेल में रहते हुए भी उन्हें दिल्ली एम्स में भर्ती कराया गया था। उससे पहले रिम्स में भी उनका इलाज चल रहा था। जेल से जमानत मिलने के बाद भी लालू यादव खराब स्वास्थ्य की वजह से ही बिहार की जगह दिल्ली में ही थे। दिल्ली में वह राज्यसभा सांसद बेटी मीसा के आवास पर रहते हैं। वहीं से लगातार स्वास्थ्य की जांच के लिए अस्पताल आना जाना होता है।

मुसीबत बढ़ाएगा कोरोना का नया वैरिएंट ? इजरायल लगा सकता है आपातकाल

नईदिल्ली। दक्षिण अफ्रीका में मिले कोरोना वायरस के नए वैरिएंट इ.1.1529 के चलते दुनिया भर में हड़कंप मच गया है। इसे अब तक के सबसे घातक वैरिएंट्स में से एक बताया जा रहा है और यही वजह है कि दुनिया भर में इसे लेकर सतर्कता बरती जा रही है। कोरोना से बमुश्किल उबरे इजरायल में भी इसका एक केस मिला है और अब देश में आपातकाल लगाने पर विचार चल रहा है। इजरायल के पीएम नफ्ताली बेनेट ने एक्सपर्ट्स की मीटिंग बुलाई है और आपातकाल लगाने की चेतावनी दी है। उन्होंने इस वैरिएंट से निपटने को लेकर बुलाई बैठक में कहा कि हम आपातकाल के मुहाने पर हैं। इस बीच विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी दुनिया भर के देशों से सतर्क रहने को कहा है और रिस्क का आकलन करते हुए पाबंदियों पर विचार करने की बात कही है। दक्षिण अफ्रीका के वायरोलॉजिस्ट

तुलियो डे ओलिविएरा ने कहा, 'हम देख सकते हैं कि यह वैरिएंट काफी तेजी से फैल रहा है। हम अगले कुछ दिन या सप्ताह में देश के हेल्थकेयर सिस्टम में दबाव देख सकते हैं।' साफ है कि आने वाले दिनों में दक्षिण अफ्रीका में नए केसों के बढ़ने का खतरा है और यह दुनिया भर के लिए गहरी चिंता का विषय है। यही वजह है कि कई देशों ने ट्रैवल बैन लगाने शुरू कर दिए हैं। आइए जानते हैं, अब तक किस देश ने उठाया है क्या कदम...

ब्रिटिश हेल्थ मिनिस्टर साजिद जावेद ने कहा कि वैज्ञानिकों ने कोरोना वैरिएंट को लेकर चिंता जताई है। ऐसे में हमने पूरी सावधानी बरतते हुए दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया, लेसोथो, इस्वातिनी, जिम्मबाब्वे और बोट्सवाना से आने वाली सभी फ्लाइट्स को निलंबित करने का फैसला लिया है। जर्मनी के स्वास्थ्य मंत्री जेन्स स्पान ने कहा कि हम दक्षिण अफ्रीका और उसके आसपास के देशों की ज्यादातर फ्लाइट्स पर रोक लगाने जा रहे हैं। हम नए वैरिएंट से लगातार बढ़ रहे केसों से बचना चाहते हैं। यही नहीं उन्होंने कहा कि इन देशों से आने वाले जर्मन लोगों को एंट्री मिलेगी, लेकिन उन्हें क्वारेंटाइन के नियमों का पालन करना होगा। इटली ने दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे, लेसोथे, बोट्सवाना, मोजाम्बिक, नामीबिया और स्वाजीलैंड से आने वाले लोगों की एंट्री पर रोक लगा दी है।

वाराणसी के बड़े निजी स्कूल में कक्षा दो की बच्ची से रेप

वाराणसी। वाराणसी में एक बड़े निजी स्कूल में आठ साल की बच्ची से रेप की सनसनीखेज वारदात हुई है। लहरतारा स्थित निजी स्कूल के वॉशरूम में कक्षा दो की छात्रा से स्वीपर ने दरिंदगी की है। स्कूल से घर पहुंची बच्ची की आपबीती सुनकर परिवार वालों के पैरों तले जमीन खिसक गई। परिजन स्कूल पहुंचे तो घंटों मामले को दबाने की कोशिश होती रही। लेकिन मासूम के साथ हुई इतनी गंभीर वारदात पर परिजन कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हुए। परिजनों ने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज खंगलवाये। आरोपित स्वीपर लहरतारा के सिंकू को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।

भितरघात से उपचुनाव में हार, हिमाचल प्रदेश में भाजपा 24 नेताओं से मांगेगी जवाब

शिमला। हिमाचल प्रदेश में तीन विधानसभा और 1 लोकसभा सीट के उपचुनाव में हार के बाद से भाजपा लगातार मंथन में जुटी है। यही नहीं प्रदेश के उपाध्यक्ष कृपाल परमार और सिरमौर जिले के अध्यक्ष पवन गुप्ता ने पद से इस्तीफा तक दे दिया है। इस बीच पार्टी ने अंतर्कलह और अनुशासनहीनता को रोकने के लिए 24 नेताओं को कारण बताओ नोटिस जारी करने का फैसला लिया है। पार्टी के सीनियर नेताओं का मानना है कि अनुशासनहीनता को रोकने के लिए ऐसा करना जरूरी है। शिमला में

चल रही तीन दिवसीय बैठक में अनुशासनहीनता का मुद्दा छाया रहा। इसके अलावा भीतरघात को पार्टी की हार की अहम वजह माना गया है। सीएम जयराम ठाकुर, पूर्व सीएम प्रेम कुमार धूमल समेत पार्टी के सभी सीनियर नेताओं ने माना कि कुछ लोगों की गतिविधियां पार्टी विरोधी थीं। उनके चलते वोट कटे और उसका नतीजा हार के तौर पर सामने आया है। इस बैठक में राज्य के प्रभारी अविनाश राय खन्ना के अलावा पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्योदान सिंह भी हिस्सा ले रहे हैं। इस बैठक में उपचुनाव की हार को लेकर मंथन हो रहा है और जरूरी होने पर सरकार से लेकर संगठन तक में बदलाव भी किए जा सकते हैं। इस बारे में एक रिपोर्ट तैयार कर केंद्रीय नेतृत्व को भेजी जाएगी।

पाकिस्तान का वो मदरसा जहां के एल्युमिनी अफगानिस्तान में तालिबान सरकार चला रहे

नई दिल्ली। पाकिस्तान के सबसे बड़े और सबसे पुराने मदरसे में से एक दारुल उलूम हक्कानिया मदरसा ने दुनिया के किसी भी स्कूल की तुलना में अधिक तालिबान नेताओं को शिक्षित किया है। अब इस मदरसे के एल्युमिनी अफगानिस्तान में तालिबान सरकार में टॉप पोस्ट्स पर हैं। इसी मदरसे के पूर्व छात्रों ने तालिबान आंदोलन की स्थापना की और 1990 के दशक में अफगानिस्तान पर शासन किया।

मदरसे के चांसलर रहे समीउल हक में 2018 में इस्लामाबाद में हत्या कर दी गई थी। उन्हें 'तालिबान का पिता' के नाम से जाता था। एक्सपर्ट्स का मानना है कि पाकिस्तान की शक्तिशाली सेना अक्सर अपने नेताओं का इस्तेमाल तालिबान को प्रभावित करने के लिए करती है। इस स्कूल के आलोचक और जियोपॉलिटिकल एक्सपर्ट्स इसे जिहाद का यूनिवर्सिटी कहते हैं और पूरे क्षेत्र में हिंसा फैलाने और हिंसा फैलाने में मदद करने का आरोप लगाते हैं। कइयों को लगता है कि ये मदरसा पाकिस्तान में चरमपंथ को बढ़ावा दे रहा है। हालांकि मदरसे का दावा है कि वह बदल गया है। न्यू यॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट बताती है कि मदरसे ने कहा है कि तालिबान को यह बताने के लिए वक्त दिया जाना चाहिए कि वह पहले जैसे नहीं हैं और अब बदल चुके हैं।

तालिबान सरकार में गृहमंत्री सिराजुद्दीन हक्कानी भी दारुल उलूम हक्कानिया मदरसे से पढ़े हुए हैं। अमेरिकी सरकार ने सिराजुद्दीन पर 37.5 करोड़ रुपये का इनाम रखा हुआ है। सिराजुद्दीन के साथ ही विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी और उच्च शिक्षा मंत्री अब्दुल बकी हक्कानी भी इसी मदरसे के एल्युमिनी हैं। मदरसे का कहना है कि न्याय मंत्री, जल और बिजली मंत्रालय सहित कई तरह के गवर्नर, सैन्य कमांडर और जज भी हक्कानिया मदरसा से शिक्षा ली है। मदरसे के वाइस चांसलर रशीदुल हक सामी ने न्यू यॉर्क टाइम्स से बातचीत करते हुए कहा है कि हमें गर्व है कि अफगानिस्तान में हमारे छात्रों ने पहले सोवियत संघ को तोड़ा और अब अमेरिका को लौटा दिया है। यह मदरसे के लिए एक सम्मान की बात है कि यहां के ग्रेजुएट अब मंत्री हैं और तालिबान सरकार में टॉप पोस्ट्स पर हैं। 1980 और 1990 के दशक में हक्कानिया में पढ़ने वाले छात्रों ने न्यू यॉर्क टाइम्स से बातचीत में कहा है कि उन्हें कोई मिलिट्री ट्रेनिंग नहीं मिली थी। कुछ छात्रों ने कहा है कि शिक्षक अक्सर जिहाद पर खुलकर चर्चा करते हैं और छात्रों को अफगानिस्तान के विद्रोह में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हालांकि सामी का कहना है कि छात्रों को न तो युद्ध के लिए ट्रेनिंग दिया गया और न ही अफगानिस्तान में लड़ने के लिए बाध्य किया गया।

आरआईसी में भारत का आतंक के खात्मे पर जोर, कहा- अफगानिस्तान को लेकर साथ काम करने की जरूरत

नई दिल्ली। भारतीय विदेश मंत्री सुब्रमण्यम जयशंकर ने रूस, भारत और चीन (फक्रट) देशों से आतंकवाद, कट्टरता पर एक साथ काम करने की बात कही हैं। उन्होंने बिना किसी दिक्कत और राजनीति के अफगानिस्तान को मानवीय सहायता पहुंचाने में मदद करने के लिए मिलकर काम करने की अपील की। वर्चुअल बैठक को संबोधित करते हुए जयशंकर ने कहा है कि रूस, भारत और चीन जैसे देशों के लिए आतंकवाद, कट्टरता और मादक पदार्थों की तस्करी आदि के खतरों पर अपने-अपने दृष्टिकोण का समन्वय करना महत्वपूर्ण है। हमें एक साथ काम करने की जरूरत है ताकि मानवीय सहायता बिना किसी रुकावट और राजनीतिकरण के अफगानिस्तान तक पहुंचे।

जयशंकर ने आगे बताया कि भारत ने अफगानिस्तान की मदद के लिए 50 मीट्रिक टन गेहूं भेज रहा है। काफी टाल-मटोल करने के बाद पाकिस्तान ने वाघा बॉर्डर के जरिए अफगानिस्तान को सहायता भेजने की इजाजत दी है। उन्होंने आगे कहा कि भारत अफगानिस्तान में समावेशी और प्रतिनिधि सरकार और यूनाइटेड नेशंस 2593 के अन्य प्रस्तावों का भी समर्थन करता है।

बता दें कि भारत ने अब तक तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दी है लेकिन अफगान लोगों की मदद करने की इच्छा जताई है। भारत ने हाल ही में मास्को में अफगानिस्तान पर हुई बैठक में भी भाग लिया है। इसके अलावा, भारत ने पिछले महीने नई दिल्ली में एनएसए स्तर पर अफगानिस्तान पर एक बैठक की मेजबानी की है।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025